RADIANT ACADEMY
(AFFILIATED TO CBSE)
B-180, sector-55, noida Ph: 120-4314312/ 6514636
Mob. : 9350251631/ 9674710772 E-mail: radiantacademynoida@yahoo.com
RADIANT ACADEMY
(J.H.S.) (AFFILIATED TO CBSE)
Sorkha, Sector- 115, noida on Fng Ph: 120- 6495106,
Mob. : 9873314814/ 9674710772 E-mail: radiantacademysorkha@yahoo.com
Let your child Explore the world with us in a Secure Environment!
We are a Co-Educational Medium Senior Secondary School
imparting quality education since the last 20 years.
FROM ADMISSION OPEN NURSERY TO CLASS XI Transport Facility Available
FACILITIES AVAILABLE AT SCHOOL : ●Highly Qualified And Trained Faculty
well Quipped Labs ●CCTV Controlled Environment ●Activity Based Learning
● Well Equipped Library ●GPS Enable Buses

आज की खबर आज ही
जनाकांक्षाओं का सजग प्रहरी
चेतना मंच

पेज 7 ओटीटी-3 का हिस्सा नहीं बनेंगी...

वर्ष : 26 अंक : 181 website:www.chetnamanch.com नोएडा, शनिवार, 22 जून, 2024 Chetna Manch Chetna Manch मूल्य 2.00 रुपया पेज: 8

नोएडा-ग्रेटर नोएडा में सीएनजी महंगी

शनिवार सुबह 6 बजे से लागू हुई नई दरें

नई दिल्ली/नोएडा (चेतना मंच)। दिल्ली-एनसीआर में रहने वाले लोगों के लिए शनिवार की सुबह महंगाई का झटका लेकर आई है। दिल्ली समेत कुछ शहरो में सीएनजी यानी कंप्रेस्ड नेचुरल गैस की कीमतों में सरकार ने बढ़ोतरी की है। दिल्ली-एनसीआर और पश्चिम यूपी के कुछ शहरों में सीएनजी एक रुपये प्रति किलो महंगी हो गई।

इंद्रप्रस्थ गैस लि. ने शनिवार से दाम में वृद्धि की घोषणा की है। इससे पहले सात मार्च को कंपनी ने ढाई रुपये प्रति किलो दाम घटाए थे।

जानकारी के मुताबिक, सीएनजी की कीमतों में वृद्धि आज यानी 22 जून की सुबह छह बजे से लागू हो गई है। जिसके बाद अब दिल्ली में सीएनजी 74.09 रुपये प्रति किलो कि बजाय 75.09 रुपये प्रति किलो मिलेगी। नोएडा, ग्रेटर

नोएडा : 79.70 रुपये
गाजियाबाद : 79.70 रुपये

नोएडा, गाजियाबाद में भी सीएनजी की कीमतों में एक रुपये की वृद्धि की गई है।

नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद में जहां अभी तक सीएनजी 78.70 रुपये प्रति किलो में मिल रही थी। जिसके बा अब यहां 79.70 रुपये प्रति किलो के भाव से सीएनजी मिलेगी। एनसीआर में शामिल गुरुग्राम में सीएनजी के रेट में कोई बदलाव नहीं हुआ है। गुरुग्राम के अलावा करनाल और कैथल में भी सीएनजी की कीमतों में बदलाव नहीं हुआ है।

पानी को लेकर बवाल, पिता व दो पुत्रों को गोली मारी, दो की मौत, परिजनों का हंगामा

गाजियाबाद (चेतना मंच)। गाजियाबाद के निवाड़ी में पानी के विवाद को लेकर बड़ा बवाल खड़ा हो गया है। पानी के झगड़े में पिता व दो पुत्रों को दूसरे गांव के दबंगों ने गोली मार दी। इसमें पिता व एक पुत्र की मौके पर ही मौत हो गई है। आरोपियों पर कार्यवाही की मांग को लेकर पीड़ित परिवार व उसके गांव के लोग हंगामा कर रहे हैं।

गाजियाबाद के मोदीनगर क्षेत्र में निवाड़ी के गांव खिंदौड़ा में शुक्रवार रात पानी को लेकर हुए विवाद में दबंगों ने बाग रखवाली करने वाले पिता व दो पुत्रों को गोलियों से भून दिया। इसमें पिता पप्पू (60) व पुत्र राजा (25) की मौत हो गई। **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

पुलिस ने नहीं की कार्यवाही

इस घटना में मारे गये पप्पू के परिजन मेहराज ने आरोप लगाया कि देर रात दबंगों ने उनके बहनोई व दो भांजों को गोली मार दी है। अभी तक पुलिस ने किसी भी आरोपी को नहीं पकड़ा है। हमें पुलिस से न्याय चाहिए। जब तक आरोपियों को नहीं पकड़ा जाता हम यहां से नहीं हटेंगे।

टोने-टोटके के शक में महिला से हैवानियत, सर के बाल काटे, पेशाब पिलाया

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। ग्रेटर नोएडा में टोने-टोटके के शक में एक महिला के साथ हैवानियत का सनसनीखेज मामला सामने आया है। ग्रेटर नोएडा में ठेकेदार के परिवार ने पड़ोस में रहने वाली महिला के साथ हैवानियत की सारी हदें पार कर दीं। आरोपियों ने महिला के पहले बाल काटे फिर उसे मल मूत्र पिलाया उसके बाद महिला का वीडियो बनाकर बिहार में वायरल कर दिया। इंसानियत को शर्मसार करने वाली यह घटना थाना सूरजपुर क्षेत्र में घटित हुई है। पुलिस ने इस मामले में 3 लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

तारानगर कस्बा जिला पूर्णिया बिहार निवासी रमेश महतो (काल्पनिक नाम) ने पुलिस से की शिकायत में बताया कि वह अपने परिवार के साथ सूरजपुर के ग्राम खेड़ी में किराए पर रह रहा है। उसके मकान के पास ही ननवा ठेकेदार भी अपने परिवार के साथ रह रहा है। ननवा ठेकेदार की लड़की अक्सर बीमार रहती है। ननवा ठेकेदार वह उसके परिजनों को शक था कि उसकी पत्नी ने उसकी बेटी के ऊपर किसी भूत-प्रेत का साया छुड़वाया हुआ है। 13 जून को ननवा ठेकेदार की पत्नी पिंकी व उसकी बेटी प्रीति ने **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

गाजियाबाद में सिर कटा शव मिला

गाजियाबाद (चेतना मंच)। थाना टीला मोड़ क्षेत्र के भोपुरा लोनी पर एक युवक का सिर कटा शव बरामद होने से सनसनी फैल गई है। पुलिस मौके पर जांच कर रही हैं। वहीं सिर की तलाश झाड़ियों में की गई मगर सिर नहीं मिला।

मृतक की उम्र लगभग 25 वर्ष

थाना प्रभारी पुलिस बल के साथ मौके पर मौजूद पुलिस का मानना हैं कि हत्या कहीं और कर शव यहाँ फेंका गया हैं। मौके पर फोरेंसिग टीम जांच में जुटी हुई है।

सूचना मिलते ही एसीपी सिद्धार्थ गौतम मौके पर पहुँच कर सिर की तलाश झाड़ियों में तेज की मगर काफी प्रयास के बाद भी सिर नहीं मिला। शव की पहचान की काफी कोशिश की गई।

एसीपी सिद्धार्थ गौतम ने बताया की हत्या कहीं और जगह कर शव को यहाँ फेंक दिया गया है। पहचान ना हो इसलिए सिर कहीं और जगह फेंक दिया गया होगा। मृतक की उम्र लगभग 25 वर्ष हैं। टीम गठित कर हत्या का खुलासा जल्द किया जाएगा।

दो मोबाइल टॉवरों से कीमती उपकरण चोरी

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-58 क्षेत्र के अलग-अलग स्थान लगे दो मोबाइल टॉवरों से चोर कीमती उपकरणों को चोरी कर ले गए।

एसजी एनकौन कंपनी के क्यू आर टी हेड सुशांत त्यागी ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि चोरों ने 1 अप्रैल की रात्रि को सेक्टर 57 के ग्रीन बेल्ट में लगे दो टावरों से आर आर यू, आर आर यू पावर कनेक्टर, जंपर केबल, क्लैंप आदि चोरी कर लिए। टावरों से सिग्नल न मिलने की शिकायत पर जब टीम ने जांच पड़ताल की तो उन्हें चोरी की जानकारी मिली पुलिस का कहना है कि मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

ई-रिक्शा से दो बैट्री चुराई

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-58 क्षेत्र के सेक्टर-57 में चोरों ने एक ई-रिक्शा से दो बैटरी चोरी कर ली। घटना के समय चालक ई रिक्शा को सड़क किनारे खड़ा कर दुकान से सामान लेने के लिए गया था।

खोड़ा कॉलोनी गाजियाबाद निवासी अखिलेश कुमार ने पुलिस से कि शिकायत में बताया कि वह ई रिक्शा चला कर अपने परिवार का भरण पोषण कर रहा है। बीते 24 अप्रैल की दोपहर को वह सेक्टर-57 में अपने ई-रिक्शा को खड़ा कर दुकान से सामान लेने के लिए चला गया। कुछ देर बाद जब वह वापस लौटा तो उसका ई-रिक्शा स्टार्ट नहीं हुआ उसने जब ईरिक्शा की जांच की तो पता चला कि किसी व्यक्ति ने ई-रिक्शा की दोनों बैटरियां चोरी कर ली हैं।

मीडियाकर्मी से बदमाशों ने लूटा मोबाइल फोन

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-63 क्षेत्र में बाइक सवार दो बदमाशों ने मीडियाकर्मी का मोबाइल फोन लूट लिया और फरार हो गए। मीडिया कर्मी ने बदमाशों का पीछा किया लेकिन वह हत्थे नहीं चढ़े।

सेक्टर-63 स्थित न्यूज़ चैनल में कार्यरत अमन कुमार ने पुलिस से की शिकायत में बताया कि वह 20 जून की रात को अपने ऑफिस से पैदल सेक्टर 63 की तरफ जा रहा था। इस दौरान पीछे से बाइक पर आए दो युवकों ने झपट्टा मारकर उसका फोन लूट लिया और भाग निकले। उसने एक व्यक्ति की मदद लेकर बाइकसवारों का पीछा किया लेकिन वह चकमा देकर फरार होने में सफल रहे।

थाना प्रभारी अवधेश प्रताप सिंह ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरा की फुटेज खगाली जा रही है।

जमीनी विवाद में ताऊ के लड़कों ने किया कातिलाना हमला

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। जमीनी विवाद में ताऊ के लड़कों ने अपने चचेरे भाई के साथ मारपीट कर उसे घायल कर दिया। पीड़ित की शिकायत पर थाना जेवर पुलिस ने चार आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है।

ग्राम चांचली निवासी करण ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि जमीन के बंटवारे को लेकर उसका अपने ताऊ के लड़कों के साथ विवाद चल रहा है। 20 जून की रात्रि को उसके ताऊ के लड़के संजय, धारा,योगेश व छोटू जबरन उसके घर में घुस आए। चारों आरोपियों ने आते ही जमीनी विवाद को लेकर उसके साथ गाली गलौज शुरू कर दी। उसने जब इस बात का विरोध किया तो आरोपियों ने मारपीट कर उसे घायल कर दिया। शोर शराबा सुनकर आस पड़ोस के लोग मौके पर इकट्ठा हो गए इसके बाद चारों आरोपी जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए।

पीड़ित ने आरोपियों के खिलाफ नाम जड़ रिपोर्ट दर्ज कराते हुए आशंका जताई है कि आरोपी भविष्य में भी उसके साथ मारपीट की घटना को अंजाम दे सकते हैं।

योगी ने बदले लखनऊ व प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने 16 आईपीएस अफसरों का ट्रांसफर कर दिया है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने लखनऊ और प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर भी बदल दिए हैं। लोकसभा चुनाव के बाद उत्तर प्रदेश में बड़े स्तर पर आईपीएस अफसरों के तबादले किए गए हैं।

आईपीएस अमरेंद्र कुमार सेंगर

आईपीएस तरुण गाबा

उत्तर प्रदेश में शनिवार को कई आईपीएस अफसरों के तबादले हुए हैं। लखनऊ व प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर बदले गए हैं। आईपीएस अमरेंद्र कुमार सेंगर लखनऊ के नए पुलिस कमिश्नर होंगे। वहीं, आईपीएस तरुण गाबा को पुलिस कमिश्नर प्रयागराज नियुक्त किया गया है। आईपीएस राजेश द्विवेदी को एसपी कुंभ प्रयागराज के पद पर नियुक्ति दी गई है। **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

नोएडा में डीसीपी बने यमुना प्रसाद

गौतमबुद्धनगर पुलिस कमिश्नरेट में पुलिस उपायुक्त के पद पर तैनात आईपीएस विद्यासागर मिश्रा को रामपुर का पुलिस अधीक्षक नियुक्त किया गया है। उनके स्थान पर पुलिस अधीक्षक क्षेत्रीय अधिसूचना बरेली के पद पर तैनात आईपीएस यमुना प्रसाद को डीसीपी नोएडा बनाया गया है।

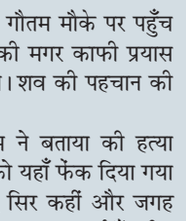

ऑटो की टक्कर से वृद्ध की मौत

नोएडा (चेतना मंच)। थाना सेक्टर-63 क्षेत्र के शनि मंदिर के पास तेज गति में आ रहे ऑटो ने स्कूटी में टक्कर मार दी टक्कर लगने से स्कूटी सवार पिता पुत्र घायल हो गए अस्पताल में उपचार के दौरान पिता की मौत हो गई।

बुलंदशहर निवासी सोहेल खान ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि वह 21 जून को अपने पिता रहीसुद्दीन के साथ स्कूटी से जा रहे थे। शनि मंदिर के पास तेज गति में आ रहे ऑटो चालक ने उनकी स्कूटी में टक्कर मार दी। टक्कर लगने से वह दोनों घायल हो गए। हादसे के बाद ऑटो चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने दोनों को सेक्टर-62 स्थित फोर्टिस अस्पताल उपचार के लिए भिजवाया यहां गंभीर स्थिति को देखते हुए उनके पिता रईस उद्दीन को दिल्ली के जीटीबी अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। उपचार के दौरान उनकी मौत हो गई।

थाना प्रभारी ने बताया कि सोहेल खान की शिकायत पर ऑटो चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है।

एक साल बाद दर्ज हुई जालसाजी की रिपोर्ट

महिला व्यवसाई से 15 लाख रुपये की ठगी

नोएडा (चेतना मंच)। आगरा माल भेजने के नाम पर जालसाज ने एक महिला व्यवसाई से 15 लाख रुपए हड़प लिए। पैसे लेने के बाद आरोपी ने माल नहीं भेजा। करीब 1 साल बाद पुलिस आयुक्त के निर्देश पर थाना सेक्टर-126 में इस मामले में मुकदमा दर्ज किया गया है।

सुभाष नगर नगला अलबतिया आगरा निवासी श्रीमती काजल शिवहरे ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उसने सेक्टर 135 स्थित किजांश स्पिरिट्स प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के साथ आगरा में काम करने के लिए 3 मई 2023 को एग्रीमेंट किया था। एग्रीमेंट के मुताबिक कंपनी के मालिक हरेंद्र कुमार रोहतेला को उनकी कंपनी के लिए मॉल आगरा भेजना था। एग्रीमेंट के तहत उन्होंने 15 लाख आरटीजीएस के माध्यम से कंपनी के खाते में जमा कर दिए। कंपनी मालिक हरेंद्र कुमार रौतेला ने 20 दिन बाद मॉल आगरा भेजने के लिए कहा। निर्धारित तिथि बीतने के पश्चात भी कंपनी द्वारा माल नहीं भेजा गया। इस पर उन्होंने कई बार हरेंद्र कुमार रौतेला को फोन कर माल भेजने को कहा। हर बार हरेंद्र कुमार कोई ना कोई बहाना बनाकर उन्हें टाल देता। काजल शिवहरे ने बताया कि कुछ समय बाद हरेंद्र कुमार रौतेला ने उनका फोन भी उठाना बंद कर दिया। उन्होंने आरोपी के खिलाफ थाने में शिकायत दी लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद उन्होंने पुलिस आयुक्त के यहां अपनी शिकायत दर्ज कराई। पुलिस आयुक्त के निर्देश के बाद आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

सोसायटी के बेसमेंट में महिला सफाईकर्मी को आवारा कुत्तों ने नोंचा

गाजियाबाद (चेतना मंच)। गाजियाबाद की हाईराइज सोसाइटी में आवारा कुत्तों द्वारा सुरक्षा कर्मियों, सफाई कर्मियों तथा सोसाइटी वासियों पर जानलेवा हमले जारी हैं।

गाजियाबाद के नंदग्राम में स्थित सवाना सोसायटी में एक बार फिर आवारा कुत्तों ने एक महिला सफाई कर्मी को बुरी तरह से काटा है। कुत्तों के हमले से महिला सफाईकर्मी बुरी तरह घायल हो गई है और उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस बात को लेकर आज सुबह सोसायटीवासियों तथा सफाई कर्मियों ने सोसायटी के गेट के बाहर नारेबाजी की। उन्होंने सोसाइटी की एओए पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया है।

सवाना सोसाइटी के निवासियों ने इस संबंध में थाना नंदग्राम को थाना अध्यक्ष को एक पत्र लिखा है। पत्र में निवासियों ने बताया है कि सोसाइटी सहायिका परमिला को ड्यूटी के दौरान सुपरवाइजर ने बेसमेंट में भेजा था, जो ए ब्लॉक के नीचे है सोसाइटीवासियों का आरोप है कि इस बेसमेंट में कुछ पशु प्रेमी आवारा कुत्तों को खाना खिलाते हैं जब महिला सफाई कर्मी बेसमेंट में गई तो वहां सुरक्षाकर्मी नदारद थे। इसी दौरान बेसमेंट में मौजूद आवारा कुत्तों ने परमिला पर हमला बोल दिया **(शेष पृष्ठ-3 पर)**

पानी पर झगड़ा

यह दुर्भाग्य, विडंबना और शर्मनाक लानत है कि देश की राजधानी दिल्ली में आम आदमी बूंद-बूंद पानी के लिए तरस रहा है। पानी के लिए वह भगदड़ और हाथापाई का हिस्सा बनने को तैयार है। गंदा और प्रदूषित पानी लेने को भी तैयार है। पानी किसी की बपौती नहीं है, वह राष्ट्रीय संसाधन है, जो जिंदगी के लिए सांस सरीखा ही है। जो सरकार घर-घर 'नल में जल' की हुंकारें भरती नहीं थकती, वह प्रधानमंत्री मोदी के ही नेतृत्व में दिल्ली में मौजूद है। देश के राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के महलनुमा आवास भी दिल्ली में ही हैं। देश की संसद भी राजधानी से ही संचालित होती है। हालांकि उनकी दुनिया 'अति विशिष्ट' है और पानी का कोई संकट नहीं है, लेकिन जो 28 लाख दिल्लीवाले पानी के लिए त्राहि-त्राहि कर रहे हैं, उनकी पीड़ा, उनका सूखापन तो उन सभी को दिखता ही होगा! देश की सर्वोच्च अदालत और प्रधान न्यायाधीश भी दिल्ली में ही हैं और जल-संकट और पानी की सियासत का मुद्दा उनकी अदालत में भी पहुंचा था, लेकिन न्याय क्यों नहीं दिया गया? यदि कोई अवमानना की गई है, तो उस पक्ष को तुरंत अदालत में तलब क्यों नहीं किया गया? बेशक पानी का संकट देश के माननीय न्यायाधीशों के लिए नहीं है, लेकिन आम आदमी तो संकट में है। उसे इंसाफ कौन देगा? एक तरफ 'आम आदमी पार्टी' (आप) की सरकार है। मुख्यमंत्री केजरीवाल जेल में हैं। दूसरी तरफ भाजपा सरकार है। यही तो लोकतंत्र है, लेकिन दोनों पक्षों की सियासत के बीच आम दिल्लीवाला क्यों पिस रहा है? दरअसल यह राजधानी दिल्ली की सनातन समस्या है। प्रधानमंत्री मोदी बीते 10 सालों से इसे देख-महसूस कर रहे होंगे! पानी के लिए भागमदौड़ उस देश की राजधानी का निरंतर दृश्य है, जो विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत की प्रतिष्ठा और छवि दांव पर हैं। ऐसे निरंतर दृश्य तो हमने किसी गरीब और पिछड़े देश तक में नहीं देखे। केंद्र सरकार को हस्तक्षेप क्यों नहीं करना चाहिए? हम आंकड़ों और दावों की बाजीगरी में उलझना नहीं चाहते कि दिल्ली के हक का पानी कितना है? हरियाणा कितना पानी नहरों के जरिए दिल्ली को सप्लाई करता है? अंतरराज्यीय जल वितरण समझौते का पालन किया जा रहा है अथवा नहीं? ये सवाल केंद्र सरकार और सर्वोच्च अदालत के बुनियादी सरोकार होने चाहिए। यदि दो राज्यों के बीच ऐसे विवाद हैं, तो अदालत को उन्हें अविलंब हल करना चाहिए। शीर्ष अदालत की और क्या भूमिका हो सकती है? दिल्ली का नंगा यथार्थ यह है कि कुछ निश्चित इलाकों में, झुग्गी-झोपडियों के आसपास और अनधिकृत बस्तियों में हमने साल-दर-साल पानी के टैंकर खड़े देखे हैं। पानी के लिए हमने मार-पिटाई होते भी देखा है। भविष्य में पानी पर ही विश्व-युद्ध हो सकता है, किसी विशेषज्ञ की ऐसी भविष्यवाणी को कैसे नकारा जा सकता है? बस्तियों के ये कुकुरमुत्ते सरकारों और राजनीतिक दलों ने अपने चुनावी स्वार्थ के मद्देनजर पैदा किए हैं। तो अब उन्हें पानी, बिजली, अन्य संसाधन भी मुहैया कराओ। टैंकरों से ही जाहिर है कि पानी का संकट अनवरत रहा है। इस पर न तो कांग्रेस और न ही भाजपा की सरकारों ने ध्यान दिया। घरेलू नलों के जरिए पानी की आपूर्ति पर्याप्त नहीं होगी, तो गली-गली टैंकर भेजने पड़ते हैं। अब पराकाष्ठा की स्थिति आ गई है, जब केजरीवाल सरकार की जल मंत्री आतिशी ने 21 जून से 'अनिश्चितकालीन अनशन' की घोषणा की है। बेशक यह मजबूरी का प्रयास है, क्योंकि सभी स्तरों की बातचीत निष्फल रही है। अंततः आतिशी ने प्रधानमंत्री मोदी को हस्तक्षेप करने और दिल्ली को उसके हक का पानी दिलाने का विनम्र आग्रह का पत्र लिखा है। यदि प्रधानमंत्री भी कुछ नहीं कर पाए, तो आतिशी अनशन को विवश होंगी। यह भी लोकतंत्र पर आघात होगा। संभव है कि आतिशी झूठे दावे कर रही होंगी, लेकिन प्रधानमंत्री को हस्तक्षेप करना चाहिए और पानी का समुचित वितरण कराना चाहिए। बल्कि विभिन्न राज्यों के बीच पानी की आपूर्ति से जुड़े मसलों को केंद्रीय जलशक्ति मंत्रालय के अधीन कर देना चाहिए। आखिर लाखों भारतीयों के भी मौलिक अधिकार हैं। संविधान का उल्लंघन कैसे किया जा सकता है? राजधानी दिल्ली में जल संकट इस कदर बढ़ चुका है कि लोगों को पीने के लिए भी पर्याप्त पानी नहीं मिल पा रहा है। नहाने के लिए तथा कपड़े धोने के लिए पानी की किल्लत अलग से है। हाल में भाजपा के सात सांसद चुने गए हैं, उन्हें भी सक्रिय हो जाना चाहिए।

रामचरित मानस

कल के अंक में आपने पढ़ा था कि वे प्रभु श्री रघुनाथजी गई हुई वस्तु को फिर प्राप्त कराने वाले, गरीब नवाज (दीनबन्धु), सरल स्वभाव, सर्वशक्तिमान और सबके स्वामी हैं। यही समझकर बुद्धिमान लोग उन श्री हरि का यश वर्णन करके अपनी वाणी को पवित्र और उत्तम फल (मोक्ष और दुर्लभ भगवत्प्रेम) देने वाली बनाते हैं॥ उससे आगे का वर्णन क्रमानुसार प्रस्तुत है।

तेहिं बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ नाइ राम पद माथा॥
मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहिं मग चलत सुगम मोहि भाई॥
उसी बल से (महिमा का यथार्थ वर्णन नहीं, परन्तु महान फल देने वाला भजन समझकर भगवत्कृपा के बल पर ही) मैं श्री रामचन्द्रजी के चरणों में सिर नवाकर श्री रघुनाथजी के गुणों की कथा कहूँगा। इसी विचार से (वाल्मीकि, व्यास आदि) मुनियों ने पहले हरि की कीर्ति गाई है। भाई! उसी मार्ग पर चलना मेरे लिए सुगम होगा॥
दो0-अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहिं।
चढि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं॥
जो अत्यन्त बड़ी श्रेष्ठ नदियाँ हैं, यदि राजा उन पर पुल बँधा देता है, तो अत्यन्त छोटी चींटियाँ भी उन पर चढ़कर बिना ही परिश्रम के पार चली जाती हैं। (इसी प्रकार मुनियों के वर्णन के सहारे मैं भी श्री रामचरित्र का वर्णन सहज ही कर सकूँगा)॥
एहि प्रकार बल मनहि देखाई। करिहउँ रघुपति कथा सुहाई॥
ब्यास आदि कबि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना॥
इस प्रकार मन को बल दिखलाकर मैं श्री रघुनाथजी की सुहावनी कथा की रचना करूँगा। व्यास आदि जो अनेकों श्रेष्ठ कवि हो गए हैं, जिन्होंने बड़े आदर से श्री हरि का सुयश वर्णन किया है॥

(क्रमशः..)

तन के साथ मन को भी स्वस्थ रखता है योग

प्रतिवर्ष 21 जून को दुनियाभर के 170 से भी ज्यादा देश अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाते हैं और योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने का संकल्प लेते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा रखे गए प्रस्ताव के जवाब में 11 दिसंबर 2014 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना की थी और वैश्विक स्तर पर पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया था। इस वर्ष पूरी दुनिया 'स्वयं और समाज के लिए योग' थीम के साथ 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रही है। प्रतिवर्ष यह दिवस मनाने का उद्देश्य योग को एक ऐसे आंदोलन के रूप में बढ़ावा देना है, जो व्यक्ति की तन्यकता को उन्नत करता है और समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए कल्याण को बढ़ावा देता है। वैसे तो योग को विश्व स्तर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सतत प्रयासों के चलते वर्ष 2015 में अपनाया गया था किंतु भारत में योग का इतिहास सदियों पुराना है। माना जाता रहा है कि पृथ्वी पर सभ्यता की शुरुआत से ही योग किया जा रहा है लेकिन साक्ष्यों की बात करें तो योग करीब पांच हजार वर्ष पुरानी भारतीय परंपरा है। करीब 2700 ईसा पूर्व वैदिक काल में और उसके बाद पतंजलि काल तक योग की मौजूदगी के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं।

महर्षि पतंजलि ने अभ्यास तथा वैराग्य द्वारा मन की वृत्तियों पर नियंत्रण करने को ही योग बताया था। हिंदू धर्म शास्त्रों में भी योग का व्यापक उल्लेख मिलता है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही अद्वैतानुभूति योग कहलाता है। इसी प्रकार भगवद्गीता बोध में वर्णित है कि दुःख-सुख, पाप-पुण्य, शत्रु-मित्र, शीत-उष्ण आदि द्वंदों से अतीतय मुक्त होकर सर्वत्र समभाव से व्यवहार करना ही योग है। भारत में योग को निरोगी रहने की करीब पांच हजार वर्ष पुरानी मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक पद्धति के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो भारतीयों की जीवनचर्या का अहम हिस्सा है। सही मायनों में योग भारत के पास प्रकृति प्रदत्त ऐसी अमूल्य धरोहर है, जिसका भारत सदियों से शारीरिक और मानसिक लाभ उठाता रहा है, लेकिन कालांतर में इस दुर्लभ धरोहर की अनदेखी का ही नतीजा है कि लोग तरह-तरह की बीमारियों के मकड़जाल में जकड़ते गए। वैसे तो स्वामी विवेकानंद ने भी अपने शिकागो सम्मेलन के भाषण में सम्पूर्ण विश्व को योग का संदेश दिया था लेकिन कुछ वर्षों पूर्व योग गुरु स्वामी रामदेव द्वारा योग विद्या को घर-घर तक पहुंचाने के बाद ही इसका व्यापक प्रचार-प्रसार संभव हो सका और आमजन योग की ओर आकर्षित होते गए। देखते ही देखते कई देशों में लोगों ने इसे अपनाना शुरू किया। आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में योग का महत्व कई गुना बढ़ गया है।

योग न केवल कई गंभीर बीमारियों से छुटकारा दिलाने में मददगार साबित होता है बल्कि मानसिक तनाव को खत्म कर आत्मिक शांति भी प्रदान करता है। दरअसल यह एक ऐसी साधना, ऐसी दवा है, जो बिना किसी लागत के शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का इलाज करने में सक्षम है।

योग न केवल कई गंभीर बीमारियों से छुटकारा दिलाने में मददगार साबित होता है बल्कि मानसिक तनाव को खत्म कर आत्मिक शांति भी प्रदान करता है। दरअसल यह एक ऐसी साधना, ऐसी दवा है, जो बिना किसी लागत के शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों का इलाज करने में सक्षम है। यह मस्तिष्क की सक्रियता बढ़ाकर दिनभर शरीर को ऊर्जावान बनाए रखता है। यही कारण है कि अब युवा एरोबिक्स व जिम छोड़कर योग अपनाने लगे हैं। माना गया है कि योग तथा प्राणायाम से जीवनभर दवाओं से भी ठीक न होने मधुमेह रोग का भी इलाज संभव है। यह वजन घटाने में भी सहायक माना गया है।

योग की इन्हीं महत्ताओं को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा से आह्वान किया था कि दुनियाभर में प्रतिवर्ष योग दिवस मनाया जाए ताकि प्रकृति प्रदत्त भारत की इस अमूल्य पद्धति का लाभ पूरी दुनिया उठा सके। यह भारत के बेहद गर्व भरी उपलब्धि रही कि संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री के इस प्रस्ताव के महज तीन माह के भीतर 177 देशों ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाए जाने के प्रस्ताव पर स्वीकृति की मोहर लगा दी, जिसके उपरांत संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 11 दिसम्बर 2014 को घोषणा कर दी गई कि प्रतिवर्ष 21 जून का दिन दुनियाभर में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए 21 जून का ही दिन निर्धारित किए जाने की भी खास वजह रही। दरअसल यह दिन उत्तरी गोलार्ध का पूरे कैलेंडर वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है। इस दिन की तिथि को ग्रीष्म संक्रांति के साथ मेल खाने के लिए बनाया गया था, जो उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है और प्रकाश और स्वास्थ्य का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति के नजरिये से देखें तो ग्रीष्म संक्रांति के बाद सूर्य दक्षिणायन हो जाता है तथा यह समय आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने में लाभकारी माना गया है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी योग के महत्व को स्वीकारने लगा है। इसलिए स्वस्थ जीवन जीने के लिए जरूरी है कि योग को अपनी दिनचर्या का अटूट हिस्सा बनाया जाए। बहरहाल, योग केवल एक व्यायाम नहीं है बल्कि यह शरीर और मन के साथ-साथ स्वयं को सशक्त बनाने का एक बेहतरीन तरीका है।

- योगेश कुमार गोयल

भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भारतीय जनता पार्टी से क्या संबंध है, यह प्रश्न 1950 के बाद से ही उठता बैठता रहा है। जून 1975 में जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक निर्णय ने इंदिरा गांधी की लोकसभा की सदस्यता समाप्त कर दी, तब उसने प्रधानमंत्री के पद से त्यागपत्र देने की बजाय देश में आंतरिक आपात स्थिति की घोषणा कर दी। संविधान के प्रमुख प्रावधान स्थगित कर दिए और लाखों लोगों को जेल में डाल दिया। कांग्रेस के उस समय के अध्यक्ष देवकांत बरुआ ने तो देश में घूम-घूम कर प्रचार करना शुरू कर दिया था कि 'इंदिरा ही भारत है और भारत ही इंदिरा है'। जब कांग्रेस को विश्वास हो गया कि पूरा देश पूरी तरह उसके शिकंजे में फंस गया है तो सरकार ने लोकसभा चुनावों की घोषणा कर दी। देश में लोकतंत्र के अस्तित्व को ही खतरे में देख देश के चार प्रमुख राजनीतिक दलों ने विलय कर जनता पार्टी के नाम से नए दल की स्थापना की। नए दल में भारतीय जनसंघ और समाजवादी पार्टी भी शामिल थीं। चुनाव में कांग्रेस पराजित हो गई और जनता पार्टी जीत गई। भारतीय जनसंघ में बहुत से ऐसे लोग भी थे जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे। समाजवादी पार्टी के लोगों ने मांग करनी शुरू कर दी कि ऐसे लोग जनता पार्टी के सदस्य तभी रह सकते हैं यदि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सदस्यता से त्यागपत्र दें। इसे उन्होंने तथाकथित दोहरी सदस्यता का मामला बताया। जनसंघ के वे लोग जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे, का कहना था कि संघ कोई राजनीतिक दल नहीं है और न ही उसकी सदस्यता के लिए आवेदन करना पड़ता है।

दरअसल संघ में सदस्यता की वह अवधारणा है ही नहीं, जिस प्रकार की अवधारणा राजनीतिक दलों में है। जो व्यक्ति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में आता है, वह संघ का स्वयंसेवक है, सदस्य नहीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोई राजनीतिक संगठन नहीं है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन है। राजनीतिक दलों के लोग अनेक सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं से विभिन्न गतिविधियों के लिए जुड़े रहते हैं। अब यदि कोई यह मांग करे कि राजनीतिक दल के लोगों को देश की सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं से नाता तोड़ लेना चाहिए, तो उसकी यह सोच विकृत सोच ही कही जाएगी। इसके विपरीत राजनीतिक लोगों को तो देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से और भी गहराई से जुड़ना चाहिए, तभी वे देश के स्वभाव और प्रकृति को समझ पाएंगे। यदि देश का कोई दल देश के स्वभाव और प्रकृति से ही दूर हट जाएगा, तो वह देश के लोगों का प्रतिनिधि होने का दावा किस प्रकार कर सकेगा, लेकिन जिन लोगों ने राजनीति ही पश्चिम के देशों के संकल्पों में से सीखी हो, वे भारतीय मानस को पढ़ नहीं पा रहे थे और देश के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों से छिटकी राजनीतिक संस्थाएं निर्माण कर रहे थे। भारतीय जनसंघ के उन लोगों ने जो राष्ट्रीय संवयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे, संघ से संबंध विच्छेद करने की मांग को स्वीकार नहीं किया। वे जनता पार्टी से बाहर आ गए। उनके साथ बहुत से ऐसे लोग भी बाहर आ गए जो संघ के स्वयंसेवक तो नहीं थे, लेकिन सिद्धांत के तौर पर इस मांग से सहमत नहीं थे कि राजनीतिक क्षेत्र के लोगों को देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से संबंध विच्छेद कर लेना चाहिए। बल्कि इस पूरे विवाद के कारण देश के समाज विज्ञानियों में यह बहस छिड़ गई कि मोटे तौर पर देश की सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाएं देश के बृहत्तर समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं और राजनीतिक दल स्टेट का।

देश में समाज बड़ा है या स्टेट? समाज के नियंत्रण या समाज के जीवन मूल्यों से दूर जाकर तो राजनीति, राजनीति नहीं बल्कि शैतान नीति बन कर रह जाएगी और अंततः तानाशाही की ओर अग्रसर हो जाएगी। लेकिन इस विवाद का अंतिम परिणाम यह हुआ कि इन सब लोगों ने मिल कर एक नए राजनीतिक दल, भारतीय जनता पार्टी का गठन कर लिया। इस विवाद का दूसरा परिणाम यह हुआ कि अगले चुनावों में जनता पार्टी पराजित ही नहीं हुई, बल्कि अल्पकाल में उसका अस्तित्व ही समाप्त हो गया। इस पराजय का विश्लेषण दो प्रकार से किया गया। पहला विश्लेषण यह था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जनता पार्टी का समर्थन करना बंद कर दिया, इसलिए वह पराजित हो गई और कालगति को प्राप्त हुई। लेकिन दूसरा विश्लेषण था कि जनता पार्टी ने सिद्धांततः स्वयं को देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन से दूर कर लिया, इससे वह कालगति को प्राप्त हुई। मुझे लगता है कि दूसरा विश्लेषण ज्यादा सही कहा जा सकता है। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम ने देश के राजनीति विज्ञान के पंडितों के आगे एक दूसरा प्रश्न भी खड़ा कर दिया। कुछ राजनीतिक पंडितों का कहना था कि यदि कोई राजनीतिक दल देश की सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ा रहता है तो वह सांप्रदायिक हो जाता है। लेकिन दूसरे राजनीतिक पंडितों का कहना था कि यदि राजनीतिक दल देश के सांस्कृतिक जीवन से टूट जाता है तो वह देश के लिए ही अप्रासंगिक हो जाता है, जैसे जनता पार्टी देश के लिए अप्रासंगिक हो गई। दरअसल ऐसा भी कहा जाता है कि राजनीति किसी भी देश के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का केवल एक हिस्सा है। समग्र स्वरूप देश का सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष ही है।

पश्चिमी देशों के पिछले पांच-छह सौ साल के राजनीति विज्ञान के साहित्य को पढने से यह धारणा बनती है कि वहां राजनीति को समग्र स्वरूप में स्वीकार किया जाता है और वहां के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को मात्र उसका एक छोटा सा हिस्सा। क्योंकि भारत के विश्वविद्यालयों में भी तीन सौ साल से वही अवधारणाएं परोसी जा रही हैं, संतुलन के लिए भी इन विषयों की भारतीय अवधारणाओं को नहीं पढ़ाया जाता, इसलिए यहां भी तथाकथित थिंक टैंक धीरे धीरे इन्हीं विदेशी अवधारणाओं के आलोक में निष्कर्ष निकालते हैं। लेकिन इसे क्या कहा जाए कि आज लगभग पांच दशकों बाद फिर यही प्रश्न उठ रहा है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का देश की राजनीति से क्या ताल्लुक है? इस प्रश्न की संरचना चाहे अलग प्रकार की है, लेकिन मूल वही है। भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का आपस में क्या संबंध है, यह बहस तब शुरू हुई जब संघ के सरसंघचालक डा. मोहन भागवत ने भारत में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रख कर यह टिप्पणी की कि आधुनिक युग में लोकतंत्र का जो स्वरूप है, उसमें धीरे धीरे विरोधी राजनीतिक दल को शत्रु मान लेने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

यह भारत के सामाजिक जीवन के लिए अंततः घातक सिद्ध हो सकती है। लोकतंत्र में पक्ष और प्रतिपक्ष होते हैं, मगर ये दोनों परस्पर पूरक होते हैं, न कि एक दूसरे के शत्रु। इसी प्रकार राजसत्ता की प्रकृति की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि राजसत्ता अहंकार को जन्म देती है। अहंकार सब व्याधियों का मूल है। इसलिए राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले लोगों को अहंकार से बचना चाहिए। मोहन भागवत जी का यह विश्लेषण या टिप्पणियां भारत के राजनीतिक जीवन के सूत्रधारों के लिए विशेष महत्व रखती हैं, लेकिन इन टिप्पणियों के आलोक में संघ और भाजपा के रिश्तों की तलाश करना गलत दरवाजा खटखटाना ही कहा जाएगा। जहां तक लोकसभा चुनावों के बीच और उसके बाद भाजपा को लेकर भाजपा के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के उस बयान का संबंध है जिसमें उन्होंने कहा था कि जिस समय अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे, उस समय भाजपा कमजोर थी, इस कारण हम संघ से सहायता लेते थे, लेकिन अब हम अपने बल पर ताकतवर हो गए हैं, इसलिए अब हमें उनसे सहायता की जरूरत नहीं है, तो यह नड्डा जी की व्यक्तिगत राय ही मानी जानी चाहिए।

-कुलदीप चंद अग्निहोत्री
वरिष्ठ स्तंभकार

राशिफल

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष : पूर्णिमा | **(विक्रम संवत् 2081)**

मेष- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)
पराक्रम रंग लाएगा। व्यापारिक स्थिति सुदृढ़ होगी। स्वास्थ्य अच्छा। प्रेम, संतान की स्थिति अच्छी।

वृष- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे , वो)
आर्थिक उन्नति करेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। प्रेम, संतान में अपनापन होगा और व्यापार बहुत अच्छा रहेगा।

मिथुन- (का, की, कु, घ, ड , छ, के, हो, हा)
ओजस्वी-तेजस्वी बने रहेंगे। जरुरत के हिसाब से वस्तुएं उपलब्ध होंगी जीवन में। झगड़ा मोल न लें। बाकी स्वास्थ्य अच्छा।

कर्क- (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डा)
स्वास्थ्य बुझा-बुझा सा रहेगा। आमदनी के नए- नए जरिया बनेंगे। प्रेम, संतान अच्छा। व्यापार बहुत अच्छा।

सिंह- (मा, मी, मु, मे, मो, टा, टी, टु, टे)
आय के नए स्तोत्र बनेंगे। पुराने स्तोत्र से भी पैसे आएंगे। सरकारी तंत्र का साथ होगा। स्वास्थ्य, प्रेम, व्यापार बहुत अच्छा।

कन्या- (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)
कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। प्रेम, संतान, व्यापार सबकुछ बहुत अच्छा है।

तुला- (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, त)
परिस्थितियां अनुकूल होने लगी हैं। रुका हुआ कार्य चलने लगेगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। प्रेम, संतान का साथ होगा।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू)
चोट-चपेट लग सकती है। किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल हैं। स्वास्थ्य मध्यम। प्रेम, संतान अच्छा।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे)
जीवनसाथी का भरपूर सहयोग मिलेगा। नौकरी-चाकरी की स्थिति अच्छी होगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

मकर- (भो,जा,जी,जू,जे,जो,खा,खी,खू,खे,गा,गी)
शत्रुओं का समन होगा। रुका हुआ कार्य चल पड़ेगा। स्वास्थ्य नरम-गरम। प्रेम, संतान अच्छा। व्यापार अच्छा।

कुम्भ- (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, षो, द)
भावुकता में आकर कोई निर्णय मत लीजिएगा। स्वास्थ्य नरम-गरम। प्रेम, संतान मध्यम। व्यापार अच्छा।

मीन- (दी, दु, झ, ध, दे, दो, च, चा, चि)
गृह-कलह के संकेत हैं। स्वास्थ्य मध्यम। प्रेम, संतान अच्छा। व्यापार अच्छा। शिवजी को प्रणाम करते रहें।

भाजपा जिलाध्यक्ष ने किया योग

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भाजपा पदाधिकारी कार्यकर्ताओं ने गौतमबुधनगर के 11 मंडलों सूरजपुर ग्रेटर नोएडा बिसरख जारचा बादलपुर कासना ज़ेवर रबूपुरा दादरी देहात दादरी नगर में योग किया गया।

दादरी मंडल के सेंटहुड एकैडमी स्कूल में भाजपा जिलाध्यक्ष गजेन्द्र मावी ने योग किया और योग के दौरान जिलाध्यक्ष गजेन्द्र मावी ने कहा कि 10 वर्ष से योग पूरे विश्व में मनाया जा रहा। योग शरीर को ही रोगमुक्त नहीं करता बल्कि मानसिक एवं बोद्धिक रूप से सशक्त शान्त और ओजस्वी बनाता है। हमें योग को अपने जीवन में निरंतर करते रहना चाहिए।

योग दिवस पर मुख्यरूप से जिला महामंत्री योगेश चौधरी दीपक भारद्वाज मनोज गर्ग धर्मेन्द्र कोरी जिला उपाध्यक्ष सेवानंद शर्मा पवन रावल पवन नागर राहुल पंडित सुनील भाटी कर्मवीर आर्य जिला मंत्री सत्यपाल शर्मा गुरुदेव भाटी अमित शर्मा राज नागर जितेन्द्र भाटी मनीष भाटी रवि जिन्दल मनोज भाटी महेश शर्मा सुनील शर्मा कोट राजीव सिंघल महेन्द्र नागर विचित्र तोमर संजय भाटी दिनेश भाटी आदि हज़ारो कार्यकर्ताओं ने योग दिवस पर योग किया।

कृषि विज्ञान केंद्र छोलस पर महिलाएँ सीख रही हैं आम के विभिन्न उत्पाद बनाना

दनकौर (चेतना मंच)। कृषि विज्ञान केंद्र, नूरपुर छोलस द्वारा ग्रामीण महिलाओं में रोज़गार सृजन के माध्यम से सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने हेतु केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. विनीता सिंह द्वारा 18-22 जून तक विषय (आम के मूल्य समवर्धन) परिक्षण एवं आय सृजन विषय पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण में ग्राम छोलस एवं खंडेरा से 25 प्रशिक्षणार्थी प्रतिभाग कर रही हैं।

प्रशिक्षणार्थीयों को कच्चे एवं पके हुए आम से बनाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के उत्पादों को बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के अंत में इन्हें प्रमाण पत्र भी दिया जाएगा।

केन्द्र के अध्यक्ष डॉ. मयंक कुमार राय ने बताया की कच्चे तथा पके हुए आम के ऐसे कई सारे उत्पाद हैं जिन्हें महिलाएँ तब बनाकर रख सकती हैं जब आम की उपलब्धता सस्ते मूल्यों पर बहुतायत में होती है। उन्होंने प्रशिक्षणाथियों को इस प्रशिक्षण के उपरांत समूह बनाकर इससे स्वरोज़गार कर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित भी किया।

डॉ. विनीता सिंह ने बताया की कच्चे तथा पके हुए आम के विभिन्न उत्पादों को जैसे कि - आम पापड़, आम रस, आम की जेली, आम का जैम, मुरब्बा, अचार, स्क्वॉश इत्यादि को वैज्ञानिक विधि से बनाकर 6 महीने से साल भर तक घर मे तब उपयोग में लाया जा सकता है जब बाज़ार में आम की उपलब्धता नहीं होती है। उन्होंने यह भी बतलाया कि अगर कुछ महिलाएँ समूह बनाकर इस कार्य को करें तथा इसे बाज़ार में लाने हेतु इस कार्य को आगे बढ़ाएँ तो यह महिलाओं में स्वरोज़गार कर आत्मनिर्भर अभियान को सफल बनाने में बहुत बड़ा योगदान हो सकता है। साथ ही आय उपार्जन का एक अच्छा साधन हो सकता है, और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा की जा सकती है। प्रशिक्षण के दौरान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. सुनील, डॉ. बोनिका, श्री कुँवर घनश्याम ने भी प्रशिक्षणार्थीयों को उत्पाद को बाज़ार तक पहुँचाने एवं स्वरोज़गार करने हेतु प्रेरित किया।

इस प्रशिक्षण में नीतू, सावित्री, रजिया, कृष्णा, दुलारी आदि ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

प्रयागराज मंडल के 15 रेलवे स्टेशन आधुनिक सुविधाओं से होंगे लैस

प्रयागराज (ब्यूरो)। प्रयागराज मण्डल कार्यालय के संकल्प सभागार में प्रयागराज मंडल के अधिकारियों की मंडल रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के साथ बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक के अध्यक्ष मण्डल रेल प्रबन्धक/ प्रयागराज हिमांशु बडोनी थे। । इस बैठक में अपर मण्डल रेल प्रबन्धक/सामान्य, संजय सिंह और वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक/कोचिंग, हिमांशु शुक्ला एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

रेल उपयोगकर्ताओं को रेलवे द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सेवा में सुधार करने के उपायों के लिए रेलवे प्रशासन और उपयोगकर्ताओं की प्रतिनिधि - मंडल रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति की रेल प्रशासन के साथ समय-समय पर बैठक आयोजित की जाती है।

मंडल रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के सदस्यों को संबोधित करते हुये मण्डल रेल प्रबन्धक संजय सिंह ने कहा कि आपके द्वारा आम जनमानस एवं रेल उपयोगकर्ताओं की समस्याओं एवं सुझावों का आदान-प्रदान होता है, जिससे कि हमें अपनी सुविधाओं को और बेहतर बनाने में सहयोग मिलता है साथ ही साथ आम जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप विकास कार्यों को करने में भी सहायता मिलती है।

भारतीय रेल राष्ट्र की जीवन रेखा है, भारतीय रेल एवं उत्तर मध्य रेलवे के प्रमुख और महत्वपूर्ण अंग के रूप में प्रयागराज मण्डल सर्वाधिक घनत्व वाले नई दिल्ली- हावड़ा मुख्य मार्ग के 750 किमी के गाजियाबाद - प. दीनदयाल उपाध्याय खण्ड को सेवित कर रहा है।

प्रयागराज मंडल के प्रयागराज जंक्शन एवं कानपुर सेंट्रल रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास एवं 15 स्टेशनों को अमृत भारत स्टेशन के अंतर्गत विकसित करने का कार्य प्रगति पर है जिससे जल्दी ही इन स्टेशनों पर यात्रियों को उत्कृष्ट सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी ।

इस अवसर पर वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक/ कोचिंग, हिमांशु शुक्ला ने पीपीटी के माध्यम की मंडल रेल उपयोगकर्ता परामर्शदात्री समिति के सदयों को अवगत कराते हुये बताया कि प्रयागराज मण्डल में मेन लाइन पर चलने वाली 360 में 324 ट्रेनों का संचालन 130 किमी प्रतिघंटा की अधिकतम गति पर हो रहा है। वन स्टेशन वन प्रोडक्ट अभियान के तहत 38 स्टेशनों पर स्टाल्स खुलवाये गए है। प्रयागराज एवं मिर्जापुर में रेल कोच रेस्टटोरेंट खोले गए हैं, वाटर वेंडिंग मशीने लगाई गई हैं, ऑटोमेटिक टिकट वेंडिंग मशीने लगाई गई हैं। स्वच्छता के क्षेत्र में कार्य करते हुए प्रयागराज मण्डल में 12 स्टेशनों पर यंत्रीकृत सफाई कराई जा रही है।

इस बैठक में नोएडा से विनोद कुमार, गुरुग्राम से अमरेन्द्र कुमार, अलीगढ़ से संजय पंडित, फर्रुखाबाद से राजेश हजेला, इटावा से गोपाल यादव, कानपुर से महेन्द्रनाथ मोदी, कानपुर से जीतेन्द्र कुमार पाण्डेय, कानपुर वीरेन्द्र कुमार, जगनायक सिंह यादव, फतेहपुर से गिरीश चन्द्र यादव, फतेहपुर से शिव प्रसाद त्रिपाठी, कौशांबी से ओमकार नाथ गौतम, कौशांबी से प्रवेश केसरवानी, रावेन्द्र प्रताप सिंह, चन्द्रकेश कुशवाहा, चित्रकूट से राजकुमार त्रिपाठी, पुनीत त्रिवेदी, प्रवीण चन्द्र श्रीवास्तव, प्रयागराज से रतन अग्रवाल, प्रयागराज से अशोक कुमार पाण्डेय, शशांक सोनकर, श्रीमती अनीता जायसवाल, शिव शंकर सिंह, प्रयागराज से त्रिभुवन नाथ पटेल एवं शिव प्रसाद त्रिपाठी उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश सरकार ने लिया बहुत बड़ा फैसला, सभी परिवारों की बनेगी आईडी

उत्तर प्रदेश सरकार ने बहुत बड़ा फैसला लिया है। यह फैसला उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की पहल पर लिया गया है । फैसला यह है कि उत्तर प्रदेश के सभी परिवारों की यूनिक आईडी बनाई जाएगी। उत्तर प्रदेश में रहने वाले सभी परिवारों की यूनिक आईडी को 'परिवार आईडी' का नाम दिया गया है। उत्तर प्रदेश सरकार के इस फैसले की खूब तारीफ हो रही है।

आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई नई पहल बेहद खास है। उत्तर प्रदेश सरकार प्रदेश में रहने वाले सभी परिवारों की परिवार आईडी यानी की परिवार पहचान पत्र बनवाएगी। उत्तर प्रदेश सरकार की इस पहल की खुद उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गहन समीक्षा की है। समीक्षा के बाद सीएम योगी ने प्रदेश के अधिकारियों को खास निर्देश भी जारी किए हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के इस फैसले के पूरे प्रदेश में खूब तारीफ हो रही है। उत्तर प्रदेश में एक परिवार एक पहचान योजना को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। इस योजना के तहत उत्तर प्रदेश में प्रत्येक परिवार को एक विशिष्ट नंबर जारी किया जा रहा है, जिससे राज्य के परिवारों का एक व्यापक डेटाबेस बनेगा। इससे लाभार्थियों के लिए योजनाओं के बेहतर प्रबंधन, पारदर्शी संचालन और योजना का शत-प्रतिशत लाभ मिलेगा। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में रहने वाले लगभग 3.60 करोड़ परिवार के 15.07 करोड़ लोग राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना का लाभ ले रहे हैं। इन परिवारों की राशनकार्ड संख्या ही फैमिली आईडी है जबकि 01 लाख से अधिक गैर राशन कार्ड धारकों को फैमिली आईडी कार्ड जारी किया जा चुका है। ऐसे परिवार जो कि राशन कार्ड धारक नहीं है, उनके लिए familyid.up.gov.in पर पंजीयन कर परिवार आईडी प्राप्त करने की व्यवस्था बनाई गई है।

दैनिक चेतना मंच

भगवान हनुमान बजरंग बली के अवतार श्री बालाजी (मेंहदीपुर) के संरक्षण में संचालित किया जाता है। समाचार-पत्र का यह अंक भी उन्हीं के चरणों में समर्पित है।

डाक पंजी. सं. L-10/GBD-574/99

RNI No. 69950/98

स्वामी मुद्रक प्रकाशक रामपाल सिंह रघुवंशी ने बीएफएल इन्फोटेक लि. सी-9, सेक्टर-3, नोएडा, गौतमबुद्धनगर (यू पी.) से छपवाकर, ए-131 सेक्टर-83, नोएडा से प्रकाशित किया। संपादक-रामपाल सिंह रघुवंशी

Contact:
0120-2518100,
4576372, 2518200
Mo.: 9811735566,
8750322340

E-mail:
chetnamanch.pr@gmail.com
raghuvanshirampal365@gmail.com
raghuvanshi_rampal@yahoo.co.in
www.chetnamanch.com

पृष्ठ एक के शेष....

पानी को लेकर बड़ा ....

पुत्र राजा का शव देर रात ही राजवाहे से बरामद हो गया जबकि गौताखोरो ने पिता पप्पू का शव शनिवार सुबह राजवाहे से ही बरामद किया। जबकि एक पुत्र चांद अस्पताल में भर्ती है। घटना के विरोध में मृतक के परिजनों ने गंगनहर पटरी मार्ग जाम कर दिया। घटना दो समुदाय से जुड़ी होने के कारण तनाव का माहौल बना हुआ है। मौके पर भारी पुलिसबल मौजूद है।

समीपवर्ती जनपद मेरठ के थाना जानी स्थित धौलड़ी निवासी पप्पू का परिवार आम के बाग ठेके पर लेता है। उन्होंने निवाड़ी के गांव खिंदौडा में आम के बाग ठेके पर लिए हुए है। पुलिस के अनुसार शुक्रवार रात करीब 11 बजे पप्पू अपने पुत्र राजा और चांद के साथ एक बाग से दूसरे बाग जा रहे थे। तभी रजवाहे पर अज्ञात हमलावरों ने उन्हें गोलियां से भूनकर रजवाहे में फेंक दिया। हमले में पप्पू और राजा की मौके पर ही मौत हो गई तथा चांद गम्भीर रूप से घायल हो गया। पप्पू और राजा के शव रजवाहे से बरामद हुए। पप्पू का शव गौताखोरो की मदद से बरामद किया गया। जबकि गम्भीर रूप से घायल चांद को हायर सेंटर रेफर किया गया। वहां उसकी हालत बेहद नाजुक बताई जा रही है।

पुलिस के अनुसार, शुक्रवार रात ग्रामीणों का पानी को लेकर विवाद हुआ था। पहले तो किसी तरह मामला शांत हो गया था। इसके बाद देर रात घटना को अंजाम दिया गया। घटना की सूचना से लोगों में आक्रोश पैदा हो गया। शनिवार सुबह गांव धौलड़ी से बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होकर निवाड़ी पहुचे और हंगामा किया। आक्रोशित भीड़ ने गंगनहर पटरी मार्ग जाम कर दिया। मौके पर एडीसीपी दिनेश कुमार पी सहित तमाम पुलिस अधिकारी भीड़ को समझाने का प्रयास में लगे हैं।

डीसीपी विवेक चंद्र यादव भारी पुलिस बल के साथ मौजूद हैं। हंगामा कर रहे लोगों ने पोल उखाड़ कर सड़क पर डाल कर रोड़ को जाम कर दिया।

टोने-टोटके के शक में ....

उसकी पत्नी को अकेला देखकर दबोच लिया और उसके सर के बाल काट दिए।

आरोपियों की हैवानियत यहीं पर नहीं रुकी उन्होंने जबरन उसकी पत्नी को मल मूत्र पिलाया। विरोध करने पर गाली गलौज कर मारपीट की और पुलिस में शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। रमेश महतो का आरोप है कि आरोपियों ने इस पूरे प्रकरण की वीडियो बनाकर उसे बिहार में अपने रिश्तेदारों व जानकारो के बीच वायरल कर दिया। वीडियो वायरल होने के बाद बिहार से उसके पास कई फोन आए इसके बाद उसे घटना की जानकारी मिली।

पीड़ित रमेश महतो ने इस संबंध में ननवा ठेकेदार, उसकी पत्नी पिंकी, नाबालिग बेटे तथा बेटी प्रीति के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कराया है थाना प्रभारी का कहना है की रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल की जा रही है।

योगी ने बदले ....

आईपीएस एसबी शिराडकर को अपर पुलिस महानिदेशक लखनऊ नियुक्त किया गया है। वह अभी तक लखनऊ पुलिस कमिश्नर के पद पर थे। आईपीएस रमित शर्मा को अपर पुलिस महानिदेशक बरेली जोन बनाया गया है। आईपीएस प्रेमचंद मीना को एडीजी पुलिस आवास निगम लखनऊ नियुक्त किया गया है। आईपीएस प्रशांत कुमार द्वितीय को आईजी रेंज लखनऊ नियुक्त किया गया है।

आईपीएस विनोद कुमार सिंह एडीजी साइबर क्राइम यूपी नियुक्त किए गए हैं। आईपीएस प्रकाश डी अपर पुलिस महानिदेशक रेलवे बनाए गए हैं। आईपीएस जय नारायन सिंह को एडीजी पीटीसी सीतापुर नियुक्त किया गया है।

इसी तरह, आईपीएस एलवी एंटनी देव को एडीजी सीबीसीआईडी यूपी नियुक्त किया गया है। आईपीएस रघुवीर लाल को एडीजी सुरक्षा के साथ एडीजी एसएसएफ की भी जिम्मेदारी दी गई है। आईपीएस के सत्यनारायण को अपर पुलिस महानिदेशक बनाया गया है। आईपीएस बीडी पॉल्सन को अपर पुलिस महानिदेशक प्रशिक्षण नियुक्त किया गया है।

सोसायटी के बेसमेंट में महिला....

और उसे 10 से 15 मिनट तक काटते रहे। महिला को कई जगह कुत्तों ने काटा है और उसकी हालत नाजुक बनी हुई है।

सोसाइटीवासियों का आरोप है कि उनकी सोसाइटी में पहले भी ऐसी घटना हो चुकी है इसके लिए पूरी तरह से सोसाइटी की एओए जिम्मेदार है। कई बार शिकायत करने के बावजूद सोसाइटी की एओए ने इस पर कोई कार्रवाई नहीं की है और सुरक्षाकर्मी कुत्तों को अंदर आने से नहीं रोकते हैं।

कशोरी का अपहरण

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। थाना जेवर क्षेत्र से दो युवक एक किशोरी को बहला फुसलाकर कर भगा ले गए। किशोरी के भाई की शिकायत पर पुलिस ने दोनों के खिलाफ अपहरण का मामला दर्ज किया है।

जेवर कस्बे में रहने वाले विनोद (काल्पनिक नाम) ने बताया कि 19 जून की रात्रि को पड़ोस में रहने वाला विष्णु उर्फ शाखा उसकी (17 वर्षीय) बहन को बहला फुसला कर भगा कर ले गया। किशोरी के लापता होने पर परिजनों ने जब छानबीन की तो पता चला कि किशोरी को भगाने में टिंकू ने भी आरोपी का सहयोग किया है।

थाना प्रभारी ने बताया कि पीड़ित की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है और आरोपियों की गिरफ्तारी कर किशोरी को बरामद करने का प्रयास किया जा रहा है।

न्यू टैक्स रिजीम में 5 लाख की छूट संभव, बजट में मिडिल क्लास को मिलेगी राहत!

नईदिल्ली, एजेंसी। मोदी सरकार जुलाई में वित्त वर्ष 2024-25 के लिए पूर्ण बजट पेश करने की तैयारी कर रही है। माना जा रहा है कि इसमें टैक्सपेयर्स को बड़ी राहत दी जा सकती है। इस बार बजट में इनकम टैक्स की छूट सीमा को बढ़ाया जा सकता है। यह बदलाव नई कर व्यवस्था के तहत हो सकता है। अगर ऐसा हुआ तो 10 लाख तक की आय वालों को बहुत बड़ी राहत मिल जाएगी।

इनकम टैक्स एक्सपर्ट्स का कहना है कि सरकार चाहती है कि ज्यादा से ज्यादा लोग नई टैक्स रिजीम को चुनें, इसलिए इसे अधिक आकर्षक बनाने के लिए कदम उठाए जा सकते हैं। वर्तमान में नई कर व्यवस्था के तहत तीन लाख रुपये से ज्यादा की आय पर पांच प्रतिशत कर लगता है।

माना जा रहा है कि इस स्लैब में कर छूट की सीमा को तीन लाख रुपये से बढ़ाकर पांच लाख रुपये किया जा सकता है। वहीं, सालाना 15 लाख रुपये से अधिक की कमाई पर 30 फीसदी कर का प्रावधान है। इस आय सीमा को बढ़ाकर 20 लाख रुपये किया जा सकता है।

लोगों के पास ज्यादा बचेगा पैसा- विशेषज्ञों का कहना है कि अगर बजट में राहत मिलती है तो इससे टैक्सपेयर्स के हाथ में ज्यादा पैसा बचेगा। इससे वह ज्यादा रकम खर्च कर पाएंगे। सरकार के इस कदम से उन लोगों की कर देनदारी 10,400 रुपये तक कम हो जाएगी, जो सालाना कमाई 7.6 लाख रुपये से 50 लाख रुपये की सीमा में आते हैं। वहीं, 50 लाख से एक करोड़ रुपये के टैक्स स्लैब में आने वाले लोगों को 11,400 रुपये तक कम टैक्स चुकाना होगा।

अभी दो तरह की व्यवस्थाएं

देश में अभी दो तरह की कर व्यवस्थाएं है - पुरानी और नई। पुरानी व्यवस्था उन लोगों के लिए सही है, जो होम लोन की ईएमआई दे रहे हैं। या जीवन/स्वास्थ्य बीमा या अन्य जगह निवेश कर रहे हैं। इसमें आयकर धारा 80सी के तहत कर छूट का लाभ मिलता है। वहीं, नई व्यवस्था उनके लिए ठीक है, जिनकी नई नौकरी लगी है और जिनकी बचत या कोई देनदारी नहीं है। इसमें 7.5 लाख रुपये की आय तक कोई कर नहीं लगता है। इसमें 50 हजार की मानक कटौती भी शामिल है।

इसलिए राहत संभव

विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय अर्थव्यवस्था घटती खपत की समस्या से जूझ रही है। इससे निपटने के लिए सरकार में नीति निर्माता आयकर ढांचे को तर्कसंगत बनाने के पक्ष में हैं। खासकर निम्न आय वर्ग के लिए। ऐसा माना जाता है कि कर कटौती से व्यक्तियों की आय में वृद्धि होगी। जैसे-जैसे आय बढ़ेगी, लोग अधिक खर्च करेंगे। इससे खपत बढ़ेगी और आर्थिक गतिविधियों में तेजी आएगी। हाल में हुए एक सर्वे के अनुसार, लोगों ने महंगाई, बेरोजगारी और कम होती इनकम को लेकर चिंता जताई है। वहीं, एक तरफ जहां भारतीय अर्थव्यवस्था 2023-24 में 8.2 फीसदी की दर से बढ़ी है, दूसरी तरफ खपत में उससे आधी गति से इजाफा हुआ है।

खास खबर

थाई कास्टिंग का वित्त वर्ष 24 का कर बाद लाभ 172 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई, एजेंसी। दोनों फेरस और नान फेरस मैटेरियल्स की प्रेसीजन मशीनिंग और प्रेशर डाई कास्टिंग में स्पेशलाइज रखने वाली, थाई कास्टिंग लिमिटेड (एनएसई टीसीएल) ने वित्त वर्ष 24 की दूसरी छमाही और वित्त वर्ष 24 के अपने ऑडिटेड वित्तीय परिणामों की घोषणा की है.

प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए थाई कास्टिंग लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर श्री आनंदन श्री राममुलू ने कहा, हम सहर्ष हमारी कंपनी के लिए उल्लेखनीय ग्रोथ ट्रांजैक्ट्री की रिपोर्ट देते हैं. यह सफलता नए प्रोडक्ट के डेवलपमेंट, नए क्लाइंट में वृद्धि और वन स्टॉप हाई एंड कास्टिंग सॉल्यूशंस ऑफर कर वैश्विक ब्रांड बनने के हमारे लक्ष्य के चलते हैं. आईपीओ के फलस्वरुप हमारे विस्तार और पूजी खर्च योजनाओं के चलते हम ग्रोथ पथ पर हैं. हमने एक नई सब्सिडियरी स्थापित की है और गैस नाइटराइडिंग प्लांट की स्थापना के लिए जमीन का अधिग्रहण किया है.

स्थापित क्षमता बढ़ाने के संबंध में हमारे प्रयासों पर फोकस महत्वपूर्ण है क्योंकि हम हमारे मूल्यवान ग्राहकों की बढ़ती मांग पूरी करने का प्रयास कर रहे हैं. इसके अतिरिक्त हम अधिक ऑर्डर प्राप्त कर और मौजूदा आर्डर का मूल्य बढ़ाकर कुल मिलाकर हमारा ऑर्डर बुक बढ़ने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

ईवा वीमेन्स हॉस्पिटल में एडवांस एंडोमेट्रियोसिस व एडेनोमायसिस से पीड़ित मेंटली चैलेंज्ड रोगी का सफलतापूर्वक इलाज

अहमदाबाद। ईवा वीमेन्स हॉस्पिटल ने एडवान्स एडेनोमायसिस से पीड़ित मानसिक रूप से विकलांग रोगी का सफलतापूर्वक इलाज किया, खास बात यह थी कि रोगी को स्टेज ढ्ढङ्क एंडोमेट्रियोसिस भी है जो एक गंभीर रोग है। नारणपुरा की निवासी 35 वर्षीय भूमिका प्रजापति मासिक धर्म के दौरान गंभीर रक्तस्राव और तीव्र दर्द से पीड़ित थी। उनके रोग की जटिलता अधिक हो गई क्योंकि वे मेन्टली चेलेन्ज्ड भी हैं, उन्हे असाधारण स्तर की देखभाल और विशेषज्ञता की आवश्यकता थी।ईवा महिला अस्पताल में डॉ. दीपक लिंबाचिया और उनकी अत्यधिक कुशल टीम ने रोगी की विशेष जरूरतों के अनुरूप उन्नत तकनीकों का उपयोग करके जटिल सर्जरी की। प्रक्रिया सफल रही जिससे उनके रोगों लक्षणों में काफी कमी आई।देश के प्रतिष्ठित लेप्रोस्कोपिक सर्जनों में से एक और ईवा महिला अस्पताल के संस्थापक डॉ. लिंबाचिया ने कहा, सुश्री प्रजापति के मामला काफी जटिल था. अत्यधिक चुनौतियाँ थीं और असाधारण देखभाल की आवश्यकता थी। हमारी टीम का समर्पण और ईवा वीमेन्स होस्पिटल में अत्याधुनिक सुविधाएं होने के कारण उपचार को हम प्रभावी ढंग से कर सके। हम सकारात्मक परिणाम से काफी खुश हैं ।

सेबी ने रेलिगेयर को दिया बर्मन के ओपन ऑफर के साथ आगे बढ़ने का आदेश

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड ने रेलिगेयर एंटरप्राइजेज लिमिटेड को बर्मन द्वारा डाबर समूह के ओपन ऑफर के साथ आगे बढ़ने का आदेश दिया है। अभी तक रेलिगेयर बोर्ड बर्मन द्वारा ओपन ऑफर के माध्यम से अधिग्रहण के प्रयास का विरोध कर रहा था। एक अंतरिम आदेश में सेबी ने आरईएल को एक अंडरटेकिंग पेश करने का निर्देश दिया है, जिसमें कहा गया है कि आरईएल बर्मन द्वारा ओपन ऑफर करने के लिए सभी आवश्यक वैधानिक अनुमोदन के लिए 12 जुलाई 24 तक आरबीआई सहित नियामक प्राधिकरणों के पास आवेदन करेगा। नियामक ने रेलिगेयर और उसके बोर्ड को यह भी निर्देश दिया कि वे कारण बताएं कि प्रतिभूति बाजार तक पहुंचने से उन्हें रोकने वाले निर्देशों सहित उपयुक्त निर्देश क्यों नहीं लिए जाने चाहिए।

कंपनी को मिला 243 करोड़ रुपये का काम, शेयरों पर टूट पड़े निवेशक, 9 प्रतिशत की तेजी

नईदिल्ली, एजेंसी। जीई पॉवर इंडिया लिमिटेड के शेयरों में आज 9 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखने को मिली है। इस उछाल के बाद कंपनी के शेयरों का भाव 52 वीक हाई पर पहुंच गया। जीई पावर इंडिया के शेयरों में तेजी के पीछे की वजह 243.46 करोड़ रुपये का मिला नया प्रोजेक्ट है। कंपनी को यह प्रोजेक्ट एनटीपीसी जीई पॉवर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड से मिला है। गुरुवार को कंपनी के शेयर बीएसई में 393.10 रुपये के स्तर पर बंद हुए थे। शुक्रवार सुबह स्टॉक 9.38 प्रतिशत की तेजी के साथ 430 रुपये के लेवल पर खुले। यह कंपनी का 52 वीक हाई है। सुबह 11.15 मिनट पर कंपनी के शेयरों का भाव बीएसई में 406.40 रुपये था। बता दें, जीई पावर इंडिया का 52 वीक लो लेवल 153 रुपये है।

क्या काम करना है- कंपनी शेयर बाजारों को दी जानकारी में कहा है कि इस प्रोजेक्ट के तहत नकबोराइट्स थर्मल पावर स्टेशन के यूनिट 1 और यूनिट में लगे एलएमजेड स्टीम टर्बाइन को आधुनिकीकरण के साथ-साथ दुरुस्त करना है। दोनों यूनिट की अकेले क्षमता 210 मेगावाट की है। कंपनी को यह काम 33 महीने में पूरा करना है।

1 साल में पैसा किया डबल- पिछले एक साल के दौरान जीई पॉवर इंडिया लिमिटेड के शेयरों की कीमतों में 150 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है।

सेंसेक्स में पहली बार अडानी के किसी स्टॉक की होगी एंट्री, विप्रो होगी बाहर

नईदिल्ली, एजेंसी। आडानी ग्रुप की कंपनी अडानी पोर्ट्स 24 जून को सेंसेक्स में विप्रो की जगह लेगी।

अडानी ग्रुप की यह पहली कंपनी होगी, जो सेंसेक्स में शामिल होगी। बता दें समय-समय पर 30 स्टॉक्स वाले बीएसई के बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स में बदलाव होता रहता है। इसी के तहत इस इंडेक्स से विप्रो की विदाई और अडानी पोर्ट्स की एंट्री हो रही है। अगर दोनों कंपनियों के शेयर प्राइस हिस्ट्री पर नजर डालें तो पिछले एक साल में 96 फीसद से अधिक उछला है। इसकी तुलना में बीएसई पर विप्रो के शेयर 28 फीसद ही चढ़ पाए हैं। विप्रो का 52 हफ्ते का हाई 546.10 रुपये है और लो 375 रुपये। जबकि, अडानी पोर्ट्स का 52 हफ्ते का हाई 1607.95 रुपये और लो 702.85 रुपये है। इस साल अबतक अडानी पोर्ट्स ने 40 फीसद से अधिक का रिटर्न दिया है। जबकि, विप्रो ने केवल 3.53 पर्सेंट। विप्रो का मार्केट कैप 2.58 लाख करोड़ है, जबकि अडानी पोर्ट्स का 3.18 लाख करोड़।

सुजलॉन एनर्जी के शेयरों का भाव 2 दिन में 9 प्रतिशत चढ़ा, एक्सपर्ट बोले खरीद लो, चेक करें टारगेट प्राइस

नईदिल्ली, एजेंसी। सुजलॉन एनर्जी लिमिटेड के शेयरों में आज करीब 5 प्रतिशत की उछाल देखी गई है। इस तेजी के बाद शुक्रवार की सुबह कंपनी के शेयरों का भाव 52 वीक हाई पर पहुंच गया। पिछले 2 कारोबारी सत्रों के दौरान कंपनी के शेयरों में 9 प्रतिशत की तेजी आई है। शुक्रवार की सुबह कंपनी के शेयर बीएसई में 51.11 रुपये के लेवल पर खुले थे। लेकिन कुछ देर के बाद स्टॉक का भाव 4.88 प्रतिशत की तेजी के साथ 52.99 रुपये के लेवल पर पहुंच गए थे। कंपनी का मार्केट कैप 72,000 करोड़ रुपये को पार गया था। बता दें, स्टॉक का अपर सर्किट लिमिट 5 प्रतिशत का है।

1 महीने में 20 प्रतिशत की उछाल- सुजलॉन एनर्जी का 52 वीक लो लेवल 13.38 रुपये है। कंपनी के शेयरों की कीमतों में तब से अबतक 300 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली है। वहीं,

इस साल यानी 2024 में स्टॉक का भाव 40 प्रतिशत बढ़ा है। यह साफ दर्शाता है कि सुजलॉन एनर्जी का प्रदर्शन शानदार रहा है। निवेशकों के नजरिए से बीता एक महीना भी अच्छा रहा है। इस दौरान स्टॉक का भाव 20 प्रतिशत बढ़ा है।

बता दें, सुजलॉन एनर्जी के शेयर कोविड-19 के समय पर 1.90 रुपये थे। तब से अबतक इस शेयर का भाव 30 गुना बढ़ चुका है।

पिछले वर्ष डीआरआई ने जब्त कीं 3500 करोड़ की प्रतिबंधित सामग्रियां, तस्करी के 623 मामलों का पता लगाया

नईदिल्ली, एजेंसी। राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने पिछले वित्त वर्ष में तस्करी के 623 मामलों का पता लगाया और 3500 करोड़ रुपये की प्रतिबंधित सामाग्रियां जब्त कीं। जब्त की गई सामग्रियों में सबसे ज्यादा ड्रग्स और सोना बरामद हुआ।

दरअसल डीआरआई के प्रधान महानिदेशक मोहन कुमार सिंह भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की) की एक संगोष्ठी को संबोधित किया। देश में सबसे ज्यादा ड्रग्स और गोल्ड की स्मगलिंग होती है। उन्होंने कहा कि स्मगलिंग को रोकने के लिए सप्लाई चेन को तोड़ना बहुत जरूरी है और यह सबसे बड़ी चुनौती भी है।

डीआरआई ने पिछले वित्तीय वर्ष में कई सारी प्रतिबंधित सामग्रियों का पता लगाया। डीआरआई के प्रधान महानिदेशक मोहन कुमार सिंह ने बृहस्पतिवार को कहा, आपूर्ति श्रृंखलाओं में घुसपैठ तस्करी पर अंकुश लगाने में एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। इन वस्तुओं की तस्करी के लिए हवाई यात्रियों, कोरियर और डाक कार्गो का इस्तेमाल किया जाना भी चिंता का विषय है। डीआरआई ने 623 तस्करी के मामलों का पता लगाया था। इसका मतलब है कि हर दिन औसतन 2 मामले सामने आते थे। तस्करी में डीआरआई ने 3,500 करोड़ रुपये जब्त किये थे। सिंह ने बताया कि इन स्मगलिंग में सबसे ज्यादा हिस्सा नशीले पदार्थों और साइकोट्रोपिक पदार्थों की होती है।इसके बाद सोना का नंबर आता है। इसके अलावा उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा तस्करी फ्लाइट, कूरियर और पोस्ट कार्गो के जरिये होती है। ऐसे में इस पर रोक लगाना बहुत जरूरी है। सूत्रों के मुताबिक, डीआरआई ने वित्त वर्ष 2023-24 में 1,658 किलो सोना जब्त किया, जो पिछले वर्ष जब्त किए गए सोने से 35 फीसद अधिक है। ऐसे में तस्करी के मामलों में आई तेजी को रोकना बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि 'अवैध सीमा व्यापार' अंतरराष्ट्रीय मुद्दा है, इसलिए प्रवर्तन एजेंसियों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ वैश्विक सहयोग इससे निपटने का एक तरीका है। इसके साथ ही संबंधित हितधारकों को शामिल करने से तस्करी का पता लगाने और उस पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

क्रोमा ने भारत में 500 स्टोर की उपलब्धि हासिल की

500 स्टोर का जश्न मनाने के लिए 'हैप्पी 500 टू यू' कैम्पेन किया लॉन्च

कूपन कोड 'एच500टीयू' का उपयोग करके चेकआउट पर असीमित 10 प्रतिशत छूट का एलान

मुंबई, एजेंसी। क्रोमा ने देश में अपने 500वें स्टोर के उद्घाटन की घोषणा की, जो कंपनी की वृद्धि और विस्तार यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इसे 'हैप्पी 500 टू यू' अभियान के शुभारंभ के साथ मनाया जा रहा है। यह कैम्पेन देश भर में लगातार बढ़ते ग्राहक आधार को उच्च गुणवत्ता वाले इलेक्ट्रॉनिक्स प्रॉडक्ट्स और साथ में ग्राहकों को बेहतरीन सेवाएं प्रदान करने के प्रति क्रोमा के प्रयासों को दर्शाता है।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि का जश्न मनाते हुए क्रोमा ने ग्राहकों के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए एक विशेष प्रचार शुरू किया है। 19 जून से 23 जून तक, क्रोमा स्टोर, क्रोमा डॉट कॉम और टाटा न्यू पर सभी खरीदार चेकआउट पर कूपन कोड 'एच500टीयू' का उपयोग करके अपनी खरीदारी पर 10 फीसदी की छूट का आनंद ले सकते हैं। सीमित समय की इस पेशकश के जरिये क्रोमा ने ग्राहकों द्वारा वर्षों से दिखाए गए अटूट समर्थन और विश्वास के लिए धन्यवाद अदा करने का प्रयास किया है। विशेष रूप से, यह प्रचार और भी खास है क्योंकि कूपन पर कोई उपयोग प्रतिबंध नहीं है और यह क्रोमा स्टोर, क्रोमा डॉट कॉम और टाटा न्यू सहित सभी बिक्री चैनलों पर लागू है।

क्रोमा इनफिनिटी-रिटेल लिमिटेड के डिप्टी सीईओ श्री शिवाशीष ने इस उपलब्धि पर टिप्पणी करते हुए कहा, ''हमारा 500वां स्टोर खोलना विशेष रूप से खास है क्योंकि यह ग्राहक के करीब आने के हमारे समर्पण को रेखांकित करता है। इसके साथ, अब हम देश के सभी कोनों तक पहुँच चुके हैं। इस अवसर पर हम देश भर में और अधिक लोगों तक इलेक्ट्रॉनिक्स प्रॉडक्ट्स पहुँचाते हुए अपने फुटप्रिंट को बढ़ाने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराना चाहते हैं।''

क्रोमा की शुरुआत से लेकर इलेक्ट्रॉनिक्स रिटेल में एक घरेलू नाम बनने तक की यात्रा के दौरान इनोवेशन पर निरंतर फोकस किया गया है और हमेशा इस बात पर ध्यान दिया गया है कि ग्राहकों की पसंद क्या है। आज, क्रोमा भारत के राष्ट्रीय बड़े प्रारूप वाले विशेषज्ञ ओमनी-चैनल इलेक्ट्रॉनिक्स रिटेलर के रूप में मजबूती से खड़ा है, जो 180 से अधिक प्रमुख शहरों में 550 से अधिक ब्रांडों में 16,000 से अधिक प्रॉडक्ट पेश करता है। यह विशाल उत्पाद रेंज और व्यापक पहुंच सुनिश्चित करती है कि ग्राहकों को इलेक्ट्रॉनिक्स में नवीनतम और सर्वश्रेष्ठ तक पहुंच प्राप्त हो, चाहे वे ऑनलाइन खरीदारी करें या स्टोर में।

'हैप्पी 500 टू यू' अभियान के बारे में अधिक जानकारी के लिए और उत्पादों की व्यापक रेंज को देखने के लिए, क्रोमा स्टोर्स, क्रोमा डॉट कॉम या टाटा न्यू पर जाएं।

सालाना 24.43 लाख रुपए के उच्चतम पैकेज के साथ बिमटेक में प्लेसमेंट का शानदार दौर

सर्वाधिक नियुक्तियां बीएफएसआई सेक्टर में, 464 छात्रों को अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्लेसमेंट मिला

नई दिल्ली , एजेंसी। देश के अग्रणी बी-स्कूल, बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी (बिमटेक) में कैंपस प्लेसमेंट के दौरान विद्यार्थियों को बड़ी कंपनियों में शानदार ऑफर मिले। एमबीए जॉब मार्केट में मंदी के बावजूद बैच 2022-24 के लिए बिमटेक ने 97.07 प्रतिशत की प्लेसमेंट दर हासिल की है। संस्थान के विद्यार्थी को सालाना 24.43 लाख रुपए का उच्चतम पैकेज ऑफर किया गया। औसत पैकेज 11.10 लाख रुपए प्रति वर्ष रहा। सफलता का एक और उदाहरण कायम करते हुए बिमटेक के 464 युवा और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों ने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर नियुक्ति हासिल की है।

प्लेसमेंट अभियान इसके दो साल के 4 पूर्णकालिक कार्यक्रमों के लिए चलाया गया- पीजीडीएम, पीजीडीएम- इंटरनेशनल बिजनेस, पीजीडीएम- रिटेल मैनेजमेंट और पीजीडीएम- इंश्योरेंस बिजनेस मैनेजमेंट।

पीजीडीएम के लिए उच्चतम सीटीसी आईएनआर 22.00 एलपीए थी, उसके बाद पीजीडीएम (इंटरनेशनल बिजनेस) आइएनआर 22.00 एलपीए, पीजीडीएम (रिटेल मेनेजमेंट) आइएनआर 24.43 एलपीए और पीजीडीएम (इंश्योरेंस बिजनेस मैनेजमेंट) उच्चतम सीटीसी आइएनआर 14.00 एलपीए थी।

संस्थान के छात्रों को मिली इस शानदार सफलता के बारे में बात करते हुए बिमटेक की डायरेक्टर डॉ. प्रवीणा राजीव ने कहा, ''हमें इस बात की बहुत खुशी है कि संस्थान ने उल्लेखनीय प्लेसमेंट के साथ एक बार फिर अपनी विरासत को बनाए रखा है। कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव के लिए 145 से अधिक कंपनियों का संस्थान में आना हमारे संकाय सदस्यों, हमारे शैक्षणिक कार्यक्रमों और मजबूत कॉर्पोरेट संबंधों की प्रतिष्ठा को ही साबित करता है। हाल के दौर में टैक-फ्रेंडली और डिजिटल तौर पर मजबूत लोगों की मांग में बहुत वृद्धि हुई है। इसलिए, हमारे संस्थान ने ऐसी प्रतिभाएँ प्रदान की हैं जो लगातार बदलते माहौल से निपटने और अपने चुने हुए क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल करने में सक्षम हैं।'' बिमटेक के शानदार प्लेसमेंट स्पेल ने 39 नए संगठनों सहित विभिन्न क्षेत्रों की 145 से अधिक अग्रणी कंपनियों को आकर्षित किया। लैंडमार्क ग्रुप (होम सेंटर), ब्लैकरॉक, ईवाई इंडिया, डेलोइट, विप्रो लिमिटेड, केपीएमजी, इंफोसिस, मेक माई ट्रिप (एमएमटी), और एसबीआई जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड जैसी कई प्रमुख कंपनियों ने इस साल के प्लेसमेंट ड्राइव में भाग लिया। छात्रों को सीनियर एनालिस्ट, बिजनेस एनालिस्ट, एरिया मैनेजर, कंसल्टेंट, मैनेजमेंट ट्रेनी, डिजिटल डिमांड एनालिस्ट, रिसर्च एसोसिएट, एसोसिएट सॉल्यूशन एडवाइजर, डिप्टी मैनेजर और बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर सहित कई तरह के पदों पर काम करने का ऑफर मिला है।

गैलेक्सी एस24 सीरीज़ में गैलेक्सी एआईफीचर्स की पेशकश के साथ की मोबाइल एआई युग की शुरुआत

गुरुग्राम, एजेंसी। दुनिया तकनीक के एक नए और रोमांचक युग की शुरुआत में है। मोबाइल एआई का दौर आ गया है, जिसे सैमसंग ने गैलेक्सी एस24 सीरीज़ में गैलेक्सी एआई फीचर्स के साथ पेश किया है। यह हमारा पहला एआई फोन है। गैलेक्सी एस24 सीरीज़ में जनरेटिव एआई तकनीक के फायदे जोड़ने के लिए सैमसंग ने हाइब्रिड एआई का उपयोग किया है। एआई कई संभावनाएं पेश करता है। सैमसंग का मानना है कि मोबाइल डिवाइस एआई की क्षमता को दिखाने का जरिया हैं, क्योंकि दुनियाभर के यूजर्स अपनी रोजमर्रा की जरूरतों के लिए अपने फोन पर निर्भर रहते हैं।

रोजमर्रा की जिंदगी में मोबाइल डिवाइस की अहम भूमिका होती है, क्योंकि लोग इन्हें कई महत्वपूर्ण और यादगार पलों के दौरान इस्तेमाल करते हैं। सैमसंग इसे समझता है और मानता है कि स्मार्टफोन को अधिक उन्नत होना चाहिए ताकि उपयोगकर्ता महत्वपूर्ण क्षणों का सरल, सहज और बेहतर तरीके से आनंद ले सकें। सैमसंग गोपनीयता के महत्व को भी समझता है, इसलिए यह ब्रांड यूजर्स को इस बात पर पूरा नियंत्रण देता है कि वे क्या शेयर करें और क्या निजी रखें।

सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स में मोबाइल आरएंडडी ऑफिस के ईवीपी और हेड वॉन-जून चोई ने कहा, हमारा मानना है कि कंपनी का हाइब्रिड नजरिया सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए सबसे व्यावहारिक और विश्वसनीय समाधान है, जो सैमसंग को लीडर बनाए रखता है। हम यूजर्स को इंडस्ट्री के अग्रणी भागीदारों के साथ मिलकर खुले सहयोग के जरिए डिवाइस पर एआई के तेज रिस्पॉन्स, अतिरिक्त गोपनीयता और क्लाउड-आधारित एआई की सुविधाओं का संतुलन प्रदान कर रहे हैं, ताकि वे दैनिक जीवन के लिए जरूरी विभिन्न प्रकार के फंक्शन्स का आसानी से इस्तेमाल कर सकें।

ऑन-डिवाइस एआईके साथ संभावनाओं का विस्तार- सैमसंग ने लाइव ट्रांसलेट सुविधा को ऑन-डिवाइस एआई आधारित बनाया है, क्योंकि वॉयस कॉल स्मार्टफोन की सबसे बुनियादी और निजी सुविधा है। सैमसंग यूजर्स को भाषा की बाधाओं के बिना संवाद करने के लिए सशक्त बनाने के लिए प्रतिबद्ध है और यह सुनिश्चित करता है कि हर संवाद पूरी तरह सुरक्षित और निजी हो।

मिचेल स्टार्क बने वर्ल्ड कप के सबसे महान गेंदबाज़, मलिंगा को पछाड़ बना दिया विश्व रिकॉर्ड

नईदिल्ली, एजेंसी। वर्ल्ड कप इतिहास के सबसे महाने गेंदबाज़ बन गए. वनडे और टी20 फॉर्मेट के विश्व कप को मिलाकर स्टार्क सबसे ज़्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज़ बन गए. उन्होंने श्रीलंका के पूर्व दिग्गज तेज़ गेंदबाज़ लासिथ मलिंगा को पछाड़ दिया. मलिंगा ने अपने करियर में वर्ल्ड कप खेलते हुए 94 विकेट झटके थे.

अब मिचेल स्टार्क उनसे आगे निकलते हुए 95 विकेट के आंकड़े पर पहुंच गए. ऑस्ट्रेलियाई पेसर ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 में बांग्लादेश के खिलाफ खेले गए मैच में यह ऐतिहासिक आंकड़ा छुआ. टी20 वर्ल्ड कप 2024 का 44वां मैच ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश के बीच खेला गया. यह सुपर-8 के चरण का मैच था, जिसमें स्टार्क ने तंज़ीद हसन को बोल्ड कर अपने करियर में विश्व कप का विकेट नंबर 95 चटकाया. स्टार्क ने मैच के पहले ही ओवर की तीसरी गेंद पर तंजीद को बोल्ड कर दिया था.

स्टार्क ने वर्ल्ड कप में मलिंगा से कम पारियों में सबसे ज़्यादा विकेट लेने का कारनामा किया. मलिंगा ने वर्ल्ड कप की 59 पारियों में में 94 विकेट चटकाए थे, जबकि स्टार्क ने सिर्फ 52 पारियों में 95 विकेट अपने नाम कर लिए. इस लिस्ट में बांग्लादेश के स्टार ऑलराउंडर शाकिब अल हसन तीसरे नंबर पर हैं. शाकिब ने 75 पारियों में 92 विकेट अपने नाम कर लिए हैं.

अब तक ऐसा रहा मिचेल स्टार्क का व्हाइट बॉल करियर

मिचेल स्टार्क ने अब तक अपने करियर में 121 वनडे और 63 टी20 इंटरनेशनल मैच खेल लिए हैं. वनडे की 121 पारियों में उन्होंने 22.96 की औसत से 236 विकेट लिए हैं, जिसमें उनका बेस्ट फिगर 6/28 का रहा है. इसके अलावा टी20 इंटरनेशनल की 63 पारियों में 23.88 की औसत से 76 विकेट अपने नाम कर लिए हैं, जिसमें उनका बेस्ट फिगर 4/20 का रहा है.

वर्ल्ड कप इतिहास में सबसे ज़्यादा विकेट

- मिचेल स्टार्क- 52 पारियां- 95 विकेट
- लासिथ मलिंगा- 59 पारियां- 94 विकेट
- शाकिब अल हसन- 75 पारियां- 92 विकेट
- ट्रेंट बोल्ट- 47 पारियां- 87 विकेट
- मुथैया मुरलीधरन- 48 पारियां- 79 -विकेट
- टिम साऊदी- 47 पारियां- 77 विकेट
- ग्लेन मैक्ग्रा - 39 पारियां- 71 विकेट
- मोहम्मद शमी- 32 पारियां- 69 विकेट
- शाहिद अफरीदी- 58 पारियां-69 विकेट
- एडम जैम्पा-34 पारियां- 62 विकेट.

इंडिया वर्सेस अफगानिस्तान

सुपर-8: भारत का जीत से अगाज

बारबाडोस, एजेंसी। रोहित शर्मा की कप्तानी वाली भारतीय क्रिकेट टीम अब भी टी20 वर्ल्ड कप 2024 में एक भी मैच नहीं हारी है। भारत का अभियान ठीक पिछले साल हुए वनडे वर्ल्ड कप की तरह चल रहा है। टीम इंडिया ने 20 जून की रात को सुपर 8 के पहले मुकाबले में अफगानिस्तान को 47 रन से हराया। भारत की इस जीत में अनुभवी तेज तर्रार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने अहम भूमिका निभाई।

● 7 रन पर झटके 3 विकेट फिर भी जसप्रीत बुमराह के साथ हुआ अन्याय?

जस्सी की धारदार गेंदबाजी ने एक बार फिर विरोधियों की लंका लगा दी। लेकिन इतनी शानदार गेंदबाजी करने के बाद भी जस्सी के साथ अन्याय हुआ? जसप्रीत बुमराह ने अपने 4 ओवर के स्पेल में 1.75 की इकॉनमी से गेंदबाजी करते हुए महज 7 रन दिए और 3 विकेट झटके। इसके अलावा उन्होंने एक ओवर मेडिन भी डाला। जस्सी ने रहमानुल्लाह गुरबाज, हजरतुल्लाह जजई और नजीबुल्लाह जादरान का शिकार किया था। हालांकि इतने शानदार प्रदर्शन के बाद भी बुमराह को प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड नहीं मिला। उनकी जगह सूर्यकुमार यादव को प्लेयर ऑफ द मैच के अवॉर्ड से नवाजा गया, जिन्होंने 28 गेंद पर आक्रमक 53 रन ठोके थे। देखा जाए तो बल्लेबाजी में सूर्या की पारी और गेंदबाजी में जसप्रीत बुमराह का स्पेल दोनों ही भारत की जीत के लिए अहम थे।

कुछ ऐसा रहा मैच का हाल

भारतीय टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने अफगानिस्तान के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया था। ऐसे में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 8 विकेट पर निर्धारित 20 ओवर में 181 रन ठोक डाले। रोहित शर्मा और विराट कोहली के आउट होने के बाद सूर्यकुमार यादव (53) और हार्दिक पंड्या (32) ने मोर्चा संभाला। अंत में अक्षर पटेल ने भी तेज गति से 12 रन बनाए। अफगानिस्तान की तरफ से राशिद खान ने सर्वाधिक 3 विकेट लिए थे। 182 रन के टारगेट का पीछा करते हुए अफगानिस्तान सिर्फ 134 रन पर ही ढेर हो गई। भारत की तरफ से 3-3 विकेट जसप्रीत बुमराह और अक्षर पटेल ने झटके। 2 विकेट कुलदीप यादव को मिली। वहीं एक-एक सफलता अक्षर पटेल और रविंद्र जडेजा के हाथ भी लगी।

स्थानापन्न खिलाड़ी जोविच ने सर्बिया को हार से बचाया, इंजरी समय में दागा गोल, मैच ड्रॉ पर समाप्त

म्यूनिख, एजेंसी। अपने पहले मैच में डेनमार्क से ड्रॉ खेलने वाली स्लोवेनिया की टीम अपना अंतिम ग्रुप मैच मंगलवार को इंग्लैंड के खिलाफ खेलेगी, जबकि इसी दिन सर्बिया की भिड़ंत डेनमार्क से होगी। स्थानापन्न खिलाड़ी लुका जोविच के इंजरी टाइम में दागे गोल की बदौलत सर्बिया ने यूरोपीय फुटबॉल चैंपियनशिप (यूरो 2024) में गुरुवार को स्लोवेनिया को 1-1 से बराबरी पर रोका दिया। इसके साथ ही स्लोवेनिया की टीम यूरोपीय चैंपियनशिप में पहली जीत दर्ज करने से भी महरूम रह गई। सर्बिया को अपने पहले मैच में इंग्लैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। जेन कार्निकनिक ने 69वें मिनट में स्लोवेनिया को बढ़त दिलाई और ऐसा लग रहा था कि टीम ऐतिहासिक जीत दर्ज करने में सफल रहेगी लेकिन जोविच ने इंजरी टाइम में गोल दागकर स्कोर 1-1 कर दिया। जोविच के गोल से सर्बिया के दर्शक खुशी से झूम उठे लेकिन उन्होंने मैदान पर चीजें भी फेंकनी शुरू कर दी। गोल होने के बाद खेल शुरू होते ही रेफरी ने मैच खत्म होने का इशारा करने वाली सीटी बजा दी जिसके बाद स्लोवेनिया के खिलाड़ियों के चेहरों पर निराशा साफ देखी जा सकती थी।

मेरी गेंदों पर स्वीप मत मारो...

राशिद- सूर्यकुमार में हुई बातचीत, आईसीसी ने जारी की वीडियो

बारबाडोस, एजेंसी। बारबाडोस में टी20 विश्व कप 2024 के सुपर 8 मुकाबले के दौरान एक मजेदार वाक्या देखने को मिला जब अफगानिस्तान के कप्तान राशिद खान ने भारतीय मध्यक्रम के बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव को उनकी गेंदों पर स्वीप शॉट न मारने के लिए कहा। दोनों में बातचीत तब शुरू हुई जब सूर्यकुमार ने राशिद का बनाया दबाव कम करने के लिए उनकी गेंदों पर लगातार स्वीप मारकर बाऊंड्रीज बटोरी। मामला 11वें ओवर का था। टीम इंडिया ने विराट कोहली और ऋषभ पंत का विकेट गंवा दिया था। क्रीज पर सूर्यकुमार ही टिके थे। उनके लगाए लगातार शॉट के कारण ही राशिद खान परेशान दिखे। आईसीसी ने दोनों क्रिकेटर की बातचीत की एक वीडियो भी अपने सोशल मीडिया हैंडल पर पोस्ट की है।

बहरहाल, 53 रन की पारी खेलने के बाद सूर्यकुमार यादव ने कहा कि मुझे (7-15 ओवर) बल्लेबाजी करने में मजा आता है, यह सबसे कठिन चरण होता है जहां विपक्षी गेंदबाज चीजों को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं। मुझे उस चरण में कार्यभार संभालना पसंद है, मैं इसका आनंद लेता हूं। जब वह (कोहली) आउट हुआ तो मैंने अपनी बबलगम जोर से चबाना शुरू कर दिया था। मैंने बस अपने खेल और अपनी प्रवृत्ति का समर्थन किया। मैंने उनके (रोहित शर्मा) साथ काफी क्रिकेट खेला है। वह मेरे खेल को जानता है, इसलिए वह आराम से बैठता है और इसका आनंद लेता है। यह एक अच्छा योग है, देखते हैं अब क्या होता है।

ऐसा रहा मुकाबला

इससे पहले भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी चुनी थी। रोहित खुद तो 8 ही रन बना पाए लेकिन सूर्यकुमार यादव ने 53, हार्दिक पांड्या ने 32, कोहली ने 24 तो पंत ने 20 रन बनाकर स्कोर 8 विकेट पर 181 तक पहुंचा दिया। जवाब में खेलने उतरी अफगानिस्तान की टीम 134 रन ही बना पाई।

क्या सानिया मिर्जा सच में कर रही हैं मोहम्मद शमी से शादी?

पिता इमरान ने तोड़ी चुप्पी

नईदिल्ली, एजेंसी। टेनिस सनसनी सानिया मिर्जा और भारतीय क्रिकेटर मोहम्मद शमी क्या शादी करने वाले हैं. दरअसल, सोशल मीडिया पर इन दोनों की शादी की अफवाहों का बाजार गर्म है. सोशल मीडिया पर दोनों ट्रेंड कर रहे हैं. जिसके कारण फैन्स कंफ्यूज हो गए हैं कि क्या सच में दोनों शादी करने वाले हैं. लेकिन अब इन अफवाहों को लेकर सानिया मिर्जा के पिता इमरान मिर्जा ने रिएक्ट कर इन अफवाहों की सच्चाई बताई है. सानिया के पिता ने कंफर्म किया है कि जो भी खबरें चल रही है वह बिल्कुल बकवास है. बता दें कि हाल ही में सानिया मिर्जा और पाकिस्तानी क्रिकेटर शोएब मलिक एक दूसरे से अलग हुए हैं. वहीं, दूसरी ओर मोहम्मद शमी भी अपनी वाइफ हसीन जहां से अलग रह रहे हैं. हाल ही में सानिया मिर्जा हज यात्रा पर रवाना हुई हैं. सानिया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसकी जानकारी दी थी और कहा कि उन्हें काफी इंतजार के बाद इस पवित्र यात्रा पर जाने का अवसर मिला है. सानिया मिर्जा हज की अपनी पवित्र यात्रा शुरू कर चुकी हैं. पूर्व टेनिस खिलाड़ी ने अपने सोशल मीडिया पर घोषणा की कि उन्हें पवित्र यात्रा पर निकलने का अविश्वसनीय अवसर मिला है, क्योंकि वह जल्द ही सऊदी अरब के पवित्र शहर मक्का में होंगी. अपने एक्स अकाउंट पर शेयर किए गए एक लंबे नोट में, सानिया ने लिखा, मेरे प्यारे दोस्तों, मैं एक नए अनुभव की तैयारी कर रही हूं। मैं आप सभी से अपनी सभी गलतियों की माफ़ी मांगती हूं, मेरा दिल इस समय काफी भावुक और कृतज्ञता से भरा हुआ है।

हॉकी इंडिया ने प्री-ओलंपिक शिविर के लिए किया भारतीय टीम का किया एलान, स्ट्राइकर दिलप्रीत का कटा पत्ता

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय टीम एफआईएच हॉकी प्रो लीग में सफल प्रदर्शन के बाद लौट रही है। फिलहाल टीम 16 मैचों में 24 अंकों के साथ चौथे स्थान पर है।

हॉकी इंडिया ने गुरुवार को प्री-ओलंपिक शिविर के लिए 27 संभावित खिलाड़ियों का एलान कर दिया। यह शिविर 21 जून से 8 जुलाई तक यहां एसएआई केंद्र में आयोजित किया जाएगा। ओलंपिक में भारत को बेल्जियम, अर्जेंटीना, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और आयरलैंड के साथ पूल बी में रखा गया है। टोक्यो खेलों के कांस्य पदक विजेता 27 जुलाई को न्यूजीलैंड के खिलाफ अपने ओलंपिक अभियान की शुरुआत करेंगे। भारतीय टीम एफआईएच हॉकी प्रो लीग में सफल प्रदर्शन के बाद लौट रही है।

फिलहाल टीम 16 मैचों में 24 अंकों के साथ चौथे स्थान पर है। कोर ग्रुप में गोलकीपर कृष्ण बहादुर पाठक, पीआर श्रीजेश, सूरज करकेरा और डिफेंडर हरमनप्रीत सिंह,

जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, जुगराज सिंह, संजय और आमिर अली शामिल हैं।

मिडफील्डर्स के तौर मनप्रीत सिंह, हार्दिक सिंह, विवेक सागर प्रसाद, सुमित, शमशेर सिंह, नीलकांत शर्मा, राजकुमार पाल, विष्णुकांत सिंह, आकाशदीप सिंह और मोहम्मद राहील मौसीन को शामिल किया गया है। वहीं, मनदीप सिंह, ललित कुमार उपाध्याय, अभिषेक, दिलप्रीत सिंह, सुखजीत सिंह, गुरजंत सिंह, बॉबी सिंह धामी और अरिजीत सिंह हुंडल फॉरवर्ड हैं जिन्हें शामिल किया गया है। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के मुख्य कोच क्रेग फल्टन का मानना है कि दुनिया की शीर्ष टीमों के खिलाफ प्रो लीग मैच उनके लिए एक शानदार अनुभव था।

उन्होंने कहा, हम इस शिविर में प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण खंड शुरू करना चाहते हैं, और हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हम पेरिस 2024 ओलंपिक से पहले सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में हों।

कैरन्स कप शतरंज

भारत की हरिका दूसरे स्थान पर कायम

सैंट लुईस , यूएसए, एजेंसी। एक माह बाद होने वाले शतरंज ओलंपियाड के ठीक पहले स्बही भारतीय खिलाड़ी दुनिया भर के महत्वपूर्ण टूर्नामेंट में खेल रहे है । भारतीय महिला टीम की बेहद महत्वपूर्ण सदस्य ग्रांड मास्टर द्रोणावल्ली हरिका इस समय यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका में चल रहे कैरन्स कप शतरंज के चौंथे संस्करण में दुनिया की नौ अन्य दिग्गज महिला खिलाड़ियों के साथ खेल रही है और राउंड रॉबिन आधार पर हो रहे इस टूर्नामेंट में पाँच राउंड के बाद 3 अंक बनाकर उक्रेन की मारिया मुजयचूक के साथ सयुंक्त दूसरे स्थान पर चल रही है । चीन की तीन ज़्होंगाई 3.5 अंक बनाकर सबसे आगे चल रही है ।

हरिका नें दूसरे राउंड में स्विट्जरलैंड की पूर्व विश्व चैम्पियन अलेक्जेंड्रा कोस्टेनियुक को मात दी थी जबकि अन्य चार मुकाबलों में उन्होने जॉर्जिया की नाना दगनिडजे , यूएसए की एलिस ली ओर इरिना कृश और उक्रेन की मारिया मुजयचूक के साथ बाज़ियाँ ड्रॉ खेली है । वहीं शारजाह मास्टर्स में हुए नुकसान की भरपाई करते हुए उन्होंने अब तक अपनी फीडे रेटिंग में इस टूर्नामेंट में 3 अंको का सुधार किया

ISSF के कोटा बदलाव को स्वीकार करने के बाद श्रेयसी भारतीय निशानेबाजी टीम से जुड़ीं

नई दिल्ली, एजेंसी। अनुभवी ट्रैप निशानेबाज श्रेयसी सिंह को अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी महासंघ (आईएसएसएफ) द्वारा कोटा बदलाव का आग्रह स्वीकार करने के बाद पेरिस ओलम्पिक के लिए अंतिम 21 सदस्यीय भारतीय निशानेबाजी टीम में जोड़ दिया गया है। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। चूंकि मनु भाकर ने महिला 10 मीटर एयर पिस्टल और 25 मीटर पिस्टल स्पर्धाओं दोनों के लिए क्वालीफाई किया है। इन में से एक कोटा स्थान महिला ट्रैप निशानेबाज के लिए निर्धारित है जिससे श्रेयसी को टीम में जगह मिल गयी।

एनआरएआई के महासचिव सुल्तान सिंह ने कहा,÷हमने आईएसएसएफ से 10 मीटर एयर पिस्टल महिला से एक कोटा स्थान को ट्रैप महिला से बदलने का आग्रह किया था और हमें इसे मंजूर किये जाने पत्र प्राप्त हुआ है।इसके परिणामस्वरूप श्रेयसी सिंह को पहले से प्रकाशित 20 नामों की सूची से जोड़ दिया गया है।

श्रेयसी महिला ट्रैप स्पर्धा में राजेश्वरी कुमारी के साथ शुरुआत करेंगी। टीम में अब राइफल में आठ, पिस्टल में सात और शॉटगन स्पर्धा में छह सदस्य शामिल हैं। मिश्रित स्पर्धाओं को शामिल करते हुए, टीम अब खेल महाकुंभ में 28 जुलाई से शुरुआत करेगी।

गंभीर से पहले वीवीएस लक्ष्मण बनेंगे टीम इंडिया के हेड कोच? रिपोर्ट में हुआ बड़ा खुलासा

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट टीम के हेड कोच को लेकर इन दिनों चर्चाएं तेज़ हैं. टीम इंडिया इन दिनों टी20 वर्ल्ड कप 2024 खेल रही है. इस विश्व कप के बाद टीम के मौजूदा हेड कोच राहुल द्रविड़ का कार्यकाल खत्म हो जाएगा. द्रविड़ के बाद कौन भारतीय टीम का कोच बनेगा? इस बात को लेकर अभी कोई आधिकारिक जानकारी तो सामने नहीं आई है.

लेकिन, मीडिया रिपोर्ट्स की माने तो गौतम गंभीर का हेड कोच बनना तय है. लेकिन अब सामने आई जानकारी चौंका देने वाली है, जिसमें बताया गया कि गंभीर से पहले वीवीएस लक्ष्मण टीम इंडिया के हेड कोच बनेंगे. बता दें कि टीम इंडिया टी20 वर्ल्ड 2024 के बाद 5 मैचों की टी20 सीरीज़ के लिए ज़िम्बाब्वे का दौरा करेगी. न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक इस दौरे पर टीम इंडिया के साथ नेशनल क्रिकेट एकेडमी के चीफ वीवीएस लक्ष्मण जा सकते हैं.

अगर गंभीर टीम इंडिया के कोच बनते हैं, तो वह ज़िम्बाब्वे दौरे पर टीम इंडिया के साथ नहीं जाएंगे. हालांकि अभी इस बारे में कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है. बीसीसीआई के एक सोर्स ने बताया, इस बात की संभावना है कि वीवीएस लक्ष्मण एनसीए के कुछ कोच के साथ ज़िम्बाब्वे जाएंगे. जब भी राहुल द्रविड़ और पहली टीम के कोच ने अपने कार्यकाल के दौरान ब्रेक लिया, तब लक्ष्मण और उनकी टीम हमेशा आगे आई.

घर में पालना चाहते हैं तोता, तो रखें वास्तु शास्त्र के नियमों का ध्यान

वास्तु शास्त्र में घर में सकारात्मक ऊर्जा के संचार के लिए विस्तार से बताया है कि कौन सी वस्तु को किस स्थान पर रखना चाहिए। यहां तक वास्तु शास्त्र में पशु-पक्षियों को घर में रखने के नियम बताए गए हैं। वास्तु शास्त्र के नियमों का पालन करने से घर में नकारात्मकता दूर होती है।

वास्तु शास्त्र में घर में सकारात्मक ऊर्जा के संचार के लिए विस्तार से बताया है कि कौन सी वस्तु को किस स्थान पर रखना चाहिए। यहां तक वास्तु शास्त्र में पशु-पक्षियों को घर में रखने के नियम बताए गए हैं। वास्तु शास्त्र के नियमों का पालन करने से घर में नकारात्मकता दूर होती है। कई लोगों को घर में तोता पालना अच्छा लगता है, लेकिन क्या आपको पता है कि यह घर के लिए शुभ है या नहीं।

वास्तु शास्त्र के अनुसार तोता पालना शुभ या अशुभ

वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि घर में तोता पालने से सकारात्मकता का माहौल बनता है। यह घर की नकारात्मक ऊर्जा को दूर कर देता है। तोते का बोलने घर के लिए शुभ माना जाता है।

तोता को घर में रखनी की दिशा

वास्तु शास्त्र के नियमों को मानें तो तोते को उत्तर या पूर्व दिशा की तरफ रखा जा सकता है। उत्तर दिशा बुध ग्रह की दिशा होती है। बुद्ध बुद्धि के प्रतीक समझें जाते हैं। ऐसे में इस दिशा में तोते को रखने से बच्चों का पढ़ाई में मन लगा रहेगा। पूर्व दिशा को माना जाता है कि वह सूर्य की दिशा है। सूर्य शक्ति और सफलता के प्रतीक हैं। ऐसे में इस दिशा में तोता रखने से आपके घर में समृद्धि का वास होगा।
पिंजरे में तोता रखना सही या गलत
तोता को पिंजरे में रखने के बाद यह जरूर देखें कि वह खुश तो है। ऐसा माना जाता है कि तोता अगर पिंजरे में रहना पसंद नहीं करता है, तो घर से खुशियां चली जाती हैं। यह आपके घर में नकारात्मकता का माहौल बना देगी।

कब है कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी शुभ मुहूर्त और महत्व

चतुर्थी के दिन गणेश जी का पूजन किया जाता है। बप्पा को प्रसन्न करने के लिए यह दिन खास होता है। आय, सुख और सौभाग्य में अपार वृद्धि होती है। भगवान गणेश के साथ-साथ इस दिन चंद्रमा की पूजा का भी विधान है। चंद्रमा की पूजा के बिना ये व्रत अधूरा माना जाता है।

मान्यताओं के अनुसार, आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। हर चतुर्थी तिथि भगवान गणेश को समर्पित होती है, इसलिए इस दिन भी विधि-विधान से बप्पा की पूजा की जाती है। साथ ही व्रत भी रखा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन भगवान गणेश की आराधना करने से जीवन में व्याप्त सभी संकट दूर होते हैं। यह चतुर्थी कृष्ण पक्ष में पड़ती है, इसलिए इसे कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी कहा जाता है।

कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी तिथि

पंचांग के अनुसार, इस साल आषाढ़ महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि मंगलवार को पड़ रही है। इस तरह कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी 25 जून 2024 को मनाई जाएगी। कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी की तिथि 25 जून 2024 को रात 1.23 से प्रारंभ होगी, जो रात 11.10 तक रहेगी। इस दिन भगवान गणेश की पूजा के लिए शुभ समय सुबह 5.30 से 7.08 तक रहेगा। वहीं, शाम में 5.36 से रात 8.36 बजे तक शुभ मुहूर्त रहेगा।
इस तिथि पर भगवान गणेश की विशेष पूजा करने से सभी प्रकार के शारीरिक और मानसिक कष्टों से छुटकारा मिलता है। चतुर्थी तिथि के दिन चंद्र देव की भी पूजा की जाती है। यह महत्वपूर्ण होती है। रात के समय चंद्रमा की पूजा की जाती है और इसके बाद व्रत खोला जाता है। संकष्टी चतुर्थी के दिन चंद्रोदय रात 11.27 पर होगा।

कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी पूजा विधि

- कृष्णपिंगल संकष्टी चतुर्थी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करना चाहिए।
- फिर व्रत का संकल्प करें। सूर्य देव को अर्घ्य दें।
- इसके बाद मंदिर की साफ-सफाई करें।
- फिर एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर भगवान गणेश की मूर्ति या चित्र स्थापित करें। भगवान को हल्दी और कुमकुम का तिलक लगाएं।
- चावल और फूल चढ़ाएं। घी का दीपक जलाएं।
- बप्पा को मोदक, मिठाई और फल का भोग लगाएं।
- भगवान गणेश के मंत्रों का जाप करें।

शुक्र ग्रह कमजोर होने पर घट जाती है सुंदरता ऐसे करें मजबूत

शुक्र ग्रह को सुंदरता का कारक माना जाता है। शुक्र यदि कमजोर हो तो सुंदरता घट जाती है। यदि कुछ उपाय किए जाए जो शुक्र ग्रह को कुंडली में मजबूत किया जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र में नव ग्रहों का विशेष स्थान दिया गया है। प्रत्येक ग्रह के अपने अलग-अलग कारक होते हैं। साथ ही ग्रहों का जातकों के जीवन में भी अलग-अलग असर पड़ता है। शुक्र ग्रह का भी ज्योतिष में विशेष महत्व बताया गया है। शुक्र कमजोर हो, तो आंखों में परेशानी होने लगती है। साथ ही मधुमेह की बीमारी हो सकती है। शुक्र ग्रह को महिलाओं के लिए काफी शुभ माना गया है। इस ग्रह को महिलाओं की सुंदरता से जोड़कर देखा जाता है। माना जाता है कि जिस महिला की कुंडली में शुक्र शुभ होता है, वे काफी सुंदर होती हैं। वहीं जब शुक्र कमजोर हो तो इसका शरीर पर नकारात्मक असर भी पड़ सकता है। यहां आपको बताते हैं शुक्र कमजोर होने के क्या संकेत है और इसे कैसे मजबूत किया जा सकता है।

शुक्र कमजोर होने के क्या संकेत हैं

- चेहरे पर मुंहासों का अचानक निकलना शुक्र के कमजोर होने का संकेत माना जाता है।
- चेहरे पर इंफेक्शन भी शुक्र कमजोर होने का संकेत है।

ऐसे मजबूत करें शुक्र ग्रह

- शुक्रवार के दिन सफेद रंग के कपड़े पहनने चाहिए
- सफेद रंग की वस्तुओं का दान करना शुभ होता है
- शुक्र यंत्र को घर में स्थापित करना चाहिए
- सफेद गाय को चारा खिलाने से शुक्र के प्रकोप से मुक्ति मिलती है
- केमिकल वाले परफ्यूम की जगह प्राकृतिक महक वाले इत्र का इस्तेमाल करना चाहिए
- गंदे और फटे-पुराने कपड़े पहनने से शुक्र ग्रह अशुभ फल देता है। ऐसे में इस तरह के कपड़े पहनने से बचना चाहिए।

शनिदेव को नाराज कर सकती हैं अनजाने में हुई ये गलतियां

शनिदेव व्यक्ति के अपराधों की सजा महादशा, ढैया या साढ़ेसाती के दौरान देते हैं। शनिदेव की वक्र दृष्टि से वही जातक बच पाता है जिसने निम्नलिखित 8 में से कोई भी कार्य नहीं किया हो। कहते हैं कि शनिदेव की नाराजगी व्यक्ति को एक झटके में बर्बाद कर देती है। यदि आप भी ये 8 गलतियां कर रहे हैं तो सतर्क हो जाएं। शनिदेव डालते हैं इन पर अपनी वक्र दृष्टि :

- यदि आप ब्याज का धंधा करते हैं तो एक ना एक दिन आप पर शनिदेव की वक्र या कहें कि तिरछी दृष्टि पड़ेगी और बर्बादी शुरु हो जाएगी।
- यदि आप अपनी पत्नी के अलावा किसी अन्य महिला से संबंध रखते हैं तो निश्चित ही एक दिन शनिदेव की वक्री दृष्टि पड़ेगी और बर्बादी शुरु हो जाएगी।
- यदि आप नियमित शराब पीते हैं और खासकर मंगलवार, गुरुवार, शनिवार, प्रदोष काल, एकादशी, चतुर्थी, अमावस्या, पूर्णिमा के दिन शराब पीते हैं तो बहुत जल्द आप शनिदेव की दृष्टि की चपेट में आएंगे।
- यदि आप किसी गरीब, सफाईकर्मी, दिव्यांग, विधवा, अबला आदि को सताते हैं या उनका अपमान करते हैं तो आप तैयार रहें शनि का दंड भुगतने के लिए।
- यदि आप धर्म, देवता, गुरु, पिता और मंदिर का अपमान करते हैं या किसी भी रूप में उनका मजाक उड़ाते हैं तो दंडनायक के दंड का इंतजार करें बहुत जल्द वे हिसाब किताब पूरा कर देंगे।

- यदि आप जुआ या सट्टा खेलते हैं तो पांडवों की तरह वनवास भुगतने या कौरवों की तरह नाश होने के लिए तैयार रहें। आपके जीवन में घटना और दुर्घटना के योग बढ़ जाएंगे।
- अप्राकृतिक रूप से संभोग करना, लिव इन रिलेशनशिप में रहना, अवैदिक विवाह करना और पत्नी को सताने वाला बहुत जल्द शनि की क्रूर दृष्टि की चपेट में आ जाता है।
- झूठी गवाही देना, निर्दोष लोगों को सताना, किसी के पीठ पीछे उसके खिलाफ कोई कार्य करना, चाचा-चाची, माता-पिता, सेवकों और गुरु का अपमान करना, ईश्वर के खिलाफ होना, दांतों को गंदा रखना, तहखाने की कैद हवा को मुक्त करना, भैंस या भैंसों को मारना, सांप, कुत्ते और कौवों को सताना इन सभी से शनिदेव नराज होकर व्यक्ति के जीवन को खराब कर देते हैं।
- शनिदेव से बचने का इस कलयुग में मात्र एक ही उपाय है हनुमानजी की भक्ति करना।

भगवान विष्णु की यह शर्त पूरी नहीं कर पाई थीं देवी लक्ष्मी, धारण करना पड़ा था गरीब स्त्री का रूप

भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी से जुड़ी एक पौराणिक आज भी प्रचलित है, जिसके मुताबिक माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु धरती पर भ्रमण के लिए निकले थे। देवी लक्ष्मी के कारण भगवान विष्णु की आंखों से अश्रु बहने लगे थे। इसके कारण देवी मां को सजा भी भुगतनी पड़ी थी।

गुरुवार का दिन भगवान विष्णु को समर्पित होता है। इस दिन भगवान विष्णु की विशेष पूजा की जाती है। साथ ही उनके निमित्त व्रत भी रखा जाता है और गुरुवार व्रत कथा का पाठ भी किया जाता है। भगवान विष्णु को पीला रंग प्रिय है। ऐसे में इस दिन पीले वस्त्र पहनने चाहिए। साथ ही भगवान को पीले रंग की मिठाइयों का भोग भी लगाना चाहिए। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी से जुड़ी कई पौराणिक कथाएं प्रचलित है। कहा जाता है कि एक बार देवी लक्ष्मी के शर्त न मानने के कारण भगवान विष्णु की आंखों से अश्रु बहने लगे थे।

भगवान विष्णु ने रखी थी शर्त

पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार श्रीहरि पृथ्वी भ्रमण पर निकले थे। तब देवी लक्ष्मी ने उनसे कहा कि वह भी उनके साथ जाना चाहती हैं। तब विष्णु जी ने कहा कि वे केवल एक शर्त पर ही उनके साथ जा सकती हैं। जब लक्ष्मी जी ने शर्त पूछी तो विष्णु जी ने कहा कि पृथ्वी पर चाहे कैसी भी परिस्थिति आए, उन्हें उत्तर दिशा की ओर नहीं देखना है। लक्ष्मी जी ने शर्त स्वीकार कर ली और श्रीहरि के साथ चली गईं।
दोनों धरती पर घूम रहे थे, देवी की नजर उत्तर दिशा में पड़ी। वहां इतनी हरियाली थी कि देवी लक्ष्मी बगीचे की ओर चल पड़ीं। उन्होंने वहां से एक फूल तोड़ा और विष्णु जी के पास आ गईं। लक्ष्मी जी को देखते ही विष्णु जी रोने लगे। तब मां लक्ष्मी को विष्णु जी की शर्त याद आई। श्रीहरि ने कहा कि बिना किसी से पूछे किसी भी वस्तु को छूना अपराध माना जाता है। यह सुनकर देवी लक्ष्मी ने अपनी गलती का अहसास किया। उन्होंने माफी मांगी। श्री हरि ने कहा कि केवल बगीचे का माली ही उन्हें माफ कर सकता है। लक्ष्मी जी को माली के घर दासी बनकर रहना होगा। यह सुनकर लक्ष्मी जी तुरंत एक गरीब स्त्री का रूप धारण करके माली के घर चली गईं।
देवी लक्ष्मी ने दिया माली को आशीर्वाद
माली ने देवी लक्ष्मी से कई तरह के काम करवाए। जब माली को पता चला कि वह मां लक्ष्मी हैं, तो वह रोने लगा। उसने देवी लक्ष्मी से कहा कि जो कुछ भी उसने किया, उसके लिए उसे माफ कर दें। तब लक्ष्मी जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि जो कुछ हुआ वह भाग्य था। इसमें किसी का दोष नहीं है। लेकिन माली ने लक्ष्मी जी को अपने परिवार का सदस्य माना, इसलिए उन्होंने जीवनभर के लिए उसे सुख-समृद्धि का आशीर्वाद दिया। जिसके बाद वे विष्णु लोक लौट आईं।

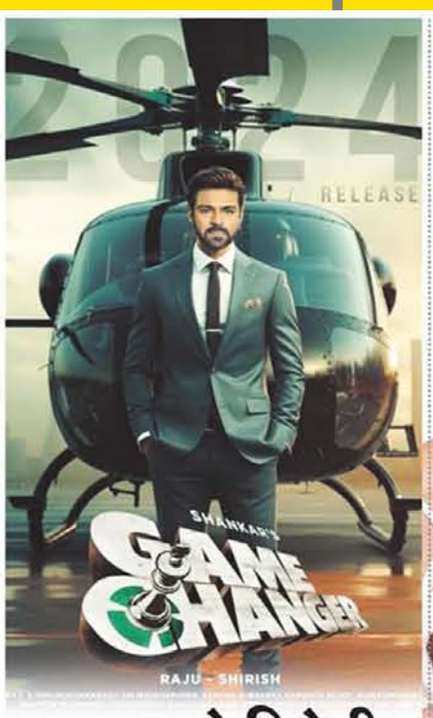

पुष्पा 2 से भिड़ेगी गेम चेंजर! बॉक्स ऑफिस पर खेल पलट देंगे राम चरण?

साउथ की कई बड़े सितारों की धमाकेदार फिल्में कतार से रिलीज होने के लिए तैयार हैं, ऐसे में उनके बॉक्स ऑफिस पर टकराव की संभावनाएं बन रही हैं। इससे पहले स्वतंत्रता दिवस के मौके पर कई फिल्में रिलीज होनी थीं, जिसमें से अल्लू अर्जुन की पुष्पा 2- द रूल भी एक थी। हालांकि, शूटिंग में हुई देरी के चलते निर्माताओं ने फिल्म की रिलीज डेट को आगे खिसका दिया। पहले 15 अगस्त, 2024 को रिलीज होने वाली पुष्पा 2 अजय देवगन की सिंघम अगेन से भिड़ने वाली थी, लेकिन दोनों ही फिल्मों की रिलीज की तारीख को बदल दिया गया। पुष्पा 2 की रिलीज की तारीख भले ही बदली हो, लेकिन अभी भी यह फिल्म तय रिलीज डेट पर बाकी कई फिल्मों से भिड़ेगी, जिसमें से एक साउथ सुपरस्टार राम चरण की गेम चेंजर भी होगी। यह प्रशंसकों के लिए किसी झटके से कम नहीं है। पुष्पा 2- द रूल इस साल के अंत में 6 दिसंबर को रिलीज होने वाली है। वहीं, राम चरण की गेम चेंजर की रिलीज की तारीख का खुलासा होना बाकी है। प्रशंसक कई महीनों से फिल्म की रिलीज डेट के बारे में अपडेट मांग रहे हैं, लेकिन फिल्म की शूटिंग में हो रही देरी और बढ़ते बजट के कारण फिल्म को रिलीज करने की योजना का फिलहाल खुलासा नहीं किया गया है। वहीं अब खबर आ रही है कि गेम चेंजर अब पुष्पा 2 से आमना-सामना कर सकती है। राम चरण की मुख्य भूमिका वाली और शंकर द्वारा निर्देशित गेम चेंजर की शूटिंग पहले से ही चल रही है। यह भी कहा जा रहा है कि फिल्म क्रिसमस के अवसर पर नजर गड़ाए हुए है। गेम चेंजर को पहले ही कई बार स्थगित किया जा चुका है और कई बार शूटिंग भी रोकी गई है, इसलिए, दिल राजू इस साल फिल्म को रिलीज करने के लिए उत्सुक हैं। अगर ऐसा होता है तो यह पहली बार होगा जब अल्लू अर्जुन और राम चरण बॉक्स ऑफिस पर एक-दूसरे से भिड़ेंगे। इससे पहले खबर आई थी कि पुष्पा 2 बॉलीवुड अभिनेता विक्की कौशल और रश्मिका मंदाना की फिल्म छावा से भी टकरा सकती है।

फिटनेस फ्रीक हैं ये अभिनेत्रियां

बॉलीवुड अभिनेत्रियां खुद को फिट रखने के लिए काफी मेहनत करती हैं। कुछ अभिनेत्रियां फिट रहने के लिए योगा का सहारा लेती हैं, तो कुछ किक बॉक्सिंग और जिम का सहारा लेती हैं। दिशा पाटनी, कैटरीना कैफ, सोहा अली खान, कैटरीना कैफ और करीना कपूर के अलावा भी कई अभिनेत्रियां हैं, जो अपने आपको फिट रखने के लिए कड़ी एक्सरसाइज करती हैं।

दिशा पाटनी

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार बॉलीवुड अभिनेत्री दिशा पाटनी के फिटनेस रूटीन में कई तरह की एक्टिविटीज शामिल हैं, जिससे वो खुद को शेप में रखती हैं। इनमें किक बॉक्सिंग, योगा और स्विमिंग जैसी कई एक्टिविटीज शामिल हैं। दिशा को वेट ट्रेनिंग और डांसिंग का भी शौक है। देखा जाए तो किक बॉक्सिंग आजकल बॉलीवुड सेलेब्स के बीच काफी लोकप्रिय वर्कआउट बन चुका है।

सोहा अली खान

हैवी एक्सरसाइज करने के बजाय सोहा अली खान अपनी फिटनेस को मेनटेन रखने के लिए स्पोर्ट्स एक्टिविटी करना ज्यादा पसंद करती हैं। बैडमिंटन खेलना, पिकल बॉल और रनिंग, जैसी सोहा की फेवरेट स्पोर्ट्स एक्टिविटीज में से हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार सोहा ने एक इंटरव्यू में कहा था कि रनिंग करने से न सिर्फ आप फिट रहते हैं बल्कि आपकी हार्ट हेल्थ भी बूस्ट होती है।

मलाइका अरोड़ा

मलाइका अरोड़ा कई बार अपनी फिटनेस के राज का खुलासा करते हुए बता चुकी हैं कि अपने दिन की शुरुआत अभिनेत्री योगा से करती हैं। उन्हें योग करना काफी पसंद है। मलाइका अक्सर सोशल मीडिया पर अपनी एक्सरसाइज के वीडियोज साझा करती रहती हैं। खुद को फिट रखने के लिए मलाइका एक दिन भी योग को मिस नहीं करती हैं। इसके अलावा एक्सरसाइज भी उनकी डेली रूटीन का हिस्सा है।

करीना कपूर खान

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार करीना कपूर खान अपने वर्कआउट रूटीन को कभी स्किप नहीं करती हैं। वह रोजाना वर्कआउट करना पसंद करती हैं। हालांकि, वह रोज अलग-अलग तरह की एक्सरसाइज करती हैं और बीच-बीच में ब्रेक भी देती हैं। स्ट्रेंथ ट्रेनिंग, योगा, ट्रेडमिल और कोर वर्कआउट, करीना के फिटनेस रूटीन में सब शामिल है। करीना दो बच्चों की मां हैं और इन्हीं एक्सरसाइज से वह इतनी फिट रहती हैं।

कैटरीना कैफ

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार कैटरीना कैफ जिम के अलावा अपनी हेल्दी डाइट का भी ख्याल रखती हैं। डाइट में कैटरीना उबली सब्जियां, रोटी, दाल और हरी सलाद शामिल करती हैं। कैटरीना ज्यादा तला-भुना खाना नहीं खाती हैं और चीनी का सेवन भी कम करती हैं। वह खूब पानी पीती हैं और हाइड्रेटेड रहने के लिए हर थोड़ी देर में कुछ ना कुछ पीती रहती हैं।

बिग बॉस ओटीटी 3 का हिस्सा नहीं बनेंगी जॉर्जिया एंड्रियानी

पहली पत्नी मलाइका अरोड़ा से अलग होने के बाद अरबाज ने मॉडल-अभिनेत्री जॉर्जिया एंड्रियानी को डेट किया था। दोनों अक्सर मीडिया में स्पॉट होते थे, हालांकि दोनों का यह रिश्ता ज्यादा लंबा नहीं चल पाया। पिछले दिनों खबर आ रही थी कि जॉर्जिया बिग बॉस ओटीटी 3 का हिस्सा बनने वाली हैं। अभिनेत्री जॉर्जिया ने खुद इन अफवाहों पर विराम लगाया है। जॉर्जिया ने अब इसकी आधिकारिक पुष्टि कर दी है कि वह शो का हिस्सा नहीं बनेंगी। जॉर्जिया ने कहा मैं बिग बॉस हाउस में नहीं जा रही हूं।

अजरबैजान में फिल्म विदा मुयार्ची की शूटिंग पूरी करेंगे अजित कुमार

अजित कुमार कॉलीवुड यानी तमिल सिनेमा के सुपरस्टार हैं। उनके चाहने वाले लाखों की संख्या में हैं। अपनी अदाकारी से उन्होंने दक्षिण भारत के साथ हिंदी पट्टी के लोगों के दिलों में भी खास जगह बनाई है। अभिनेता के प्रशंसकों को उनकी आगामी फिल्म विदा मुयार्ची की बेसब्री से इंतजार है।

अजित कुमार अजरबैजान के लिए रवाना

यह कॉलीवुड की प्रतीक्षित फिल्मों में से एक है, जिसमें अजित कुमार मुख्य भूमिका में हैं। इस फिल्म का निर्देशन मगिज थिरुमेनी कर रहे हैं। इस बीच फिल्म से जुड़ी एक नई जानकारी सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अभिनेता अजित फिल्म अंतिम शेड्यूल की शूटिंग में शामिल होने के लिए अजरबैजान के लिए रवाना हो गए हैं। उन्हें आज सुबह (20 जून) चेन्नई एयरपोर्ट पर देखा गया। इस फिल्म की लगभग 30 प्रतिशत शूटिंग अभी बाकी है। उम्मीद जताई जा रही है कि इस फिल्म को पूरा करने के बाद अभिनेता अजित गुड बैड अग्ली की शूटिंग शुरू करेंगे।

देवरा में एनटीआर और जान्हवी के बीच दिखेगी शानदार केमिस्ट्री

देवरा इस साल की बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर की ये फिल्म लगातार सुर्खियां बटोर रही है। इस फिल्म में पहली बार ये जोड़ी पर्दे पर नजर आने वाली है, जिसको लेकर दोनों कलाकारों के फैंस काफी उत्साहित हैं। निर्माता भी इस बात से भली-भांति परिचित हैं, इसलिए दोनों कलाकारों के ऊपर फिल्म का एक रोमांटिक गाना शूट कर रहे हैं, जिसकी शूटिंग इस देश में की जा रही है।

थाईलैंड में चल रही है एक गाने की शूटिंग

फैंस को जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर के बीच शानदार केमिस्ट्री देखने को मिलने वाली है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिलहाल फिल्म के एक गाने की शूटिंग थाईलैंड के खूबसूरत जगहों पर चल रही है। निर्माता इन दोनों की जोड़ी को बेहतर दिखाने के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहते। फैंस के लिए दोनों कलाकारों को इस गाने में एक साथ देखना किसी तोहफे से कम नहीं होगा।

27 सितंबर को रिलीज होगी फिल्म

बताते चलें कि देवरा का निर्देशन कोर्टला शिवा कर रहे हैं। यह जनता गराज के बाद उनकी दूसरी फिल्म है। जनता गराज में भी एनटीआर ने काम किया था। अब देवरा में वह एक खतरनाक अवतार में नजर आने वाले हैं। फिल्म में हिंदी फिल्मों के कलाकार सैफ अली खान और जान्हवी कपूर भी दिखेंगे। दोनों की यह डेब्यू तेलुगु फिल्म है। फिल्म की कहानी समुद्र के रास्ते में होने वाली तस्करी पर आधारित हो सकती है। फिल्म इस साल 27 सितंबर को रिलीज हो रही है।

ऑल वी इमेजिन एज लाइट की जीत पर बोले नवाजुद्दीन

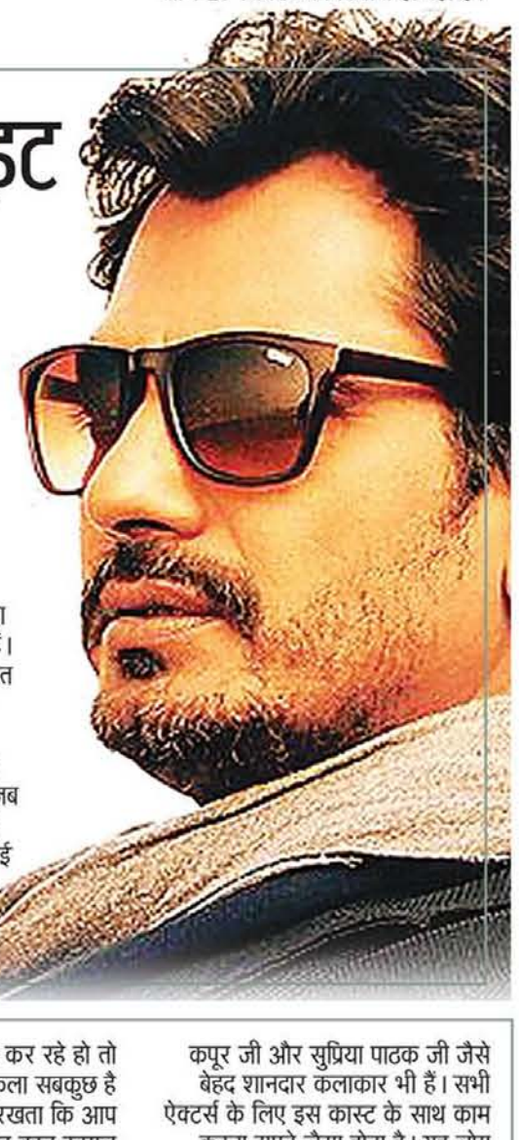

नवाजुद्दीन सिद्दीकी इन दिनों अपनी आगामी फिल्म रौतू का राज को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। इस फिल्म वे एक पुलिस वाले की भूमिका में नजर आने वाले हैं। इन दिनों वे अपनी फिल्म के प्रमोशन में व्यस्त हैं। जल्द ही उनकी यह फिल्म जी5 और ओटीटीप्ले प्रीमियम पर स्ट्रीम होने वाली है। रौतू का राज के प्रमोशन के दौरान उन्होंने अपने करियर के अलावा भारत में बन रही कम बजट की फिल्मों के भविष्य के बारे में भी खुलकर बातें करते नजर आए। ऑल वी इमेजिन एज लाइट जैसी फिल्मों को समर्थन नहीं मिलता

नवाजुद्दीन सिद्दीकी बॉलीवुड में अलग किस्म की भूमिकाएं निभाने के लिए मशहूर हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान जब उनसे पूछा गया कि वे ऑल वी इमेजिन एज लाइट की जीत के बारे में क्या सोचते हैं। इस सवाल का जवाब देते हुए अभिनेता कहते हैं, देखिए मैं सीधी और साफ बात कहूंगा ऑल वी इमेजिन एज लाइट जैसी फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में सराहा जाता है, लेकिन भारत में ऐसी फिल्मों को कोई सपोर्ट नहीं करता है। कान फिल्म फेस्टिवल ने इसे साबित कर दिया है।

फिल्म निर्माता को मसाला फिल्म चाहिए

नवाजुद्दीन सिद्दीकी कई कम बजट की फिल्मों का हिस्सा रह चुके हैं। अभिनेता कहते हैं, मेरे पास कई युवा फिल्म निर्माता अपनी स्क्रिप्ट के साथ उनके पास आते हैं। वे अपनी कहानी को लेकर काफी उत्साहित रहते हैं। मुझे उनकी कहानियां पसंद भी आती है, लेकिन उनमें से कई फिल्म बन नहीं पाती हैं क्योंकि फिल्म निर्माताओं को उनमें मसाला नहीं दिख रहा होता है। मैं जब ऐसी किसी कहानी के साथ फिल्म मेकर्स के पास जाता हूं तब वे कहते हैं नवाज भाई इसमें कोई एक्शन नहीं है, गाना नहीं है, ड्रामा नहीं है और फिर वह फिल्म बन ही नहीं पाती है।

सनी सिंह को एक्शन डायरेक्टर के बेटे होने का बॉलीवुड में मिला फायदा?

कार्तिक आर्यन ने पिछले दिनों कहा था कि इंडस्ट्री में उनका कोई दोस्त नहीं है। जबकि कार्तिक के साथ प्यार का पंचनामा 2 और सोनू के टीटू की स्वीटी जैसी फिल्मों में नजर आ चुके सनी सिंह का कहना है कि कार्तिक और उनकी दोस्ती बहुत अच्छी है। सनी इन दिनों फिल्म लव की अरेंज मैरिज में नजर आ रहे हैं।

आपके साथ कई फिल्मों में स्क्रीन शेयर कर चुके कार्तिक आर्यन ने हाल ही में कहा कि इंडस्ट्री में मेरा कोई दोस्त नहीं है। क्या फिल्म इंडस्ट्री में दोस्त बनाना इतना मुश्किल है?

मेरे और कार्तिक के बीच तो घर जैसी बात है। हम लोग एक ही ग्रुप के हैं, तो हम दोस्त भी बहुत अच्छे हैं। उसके अभी कुछ दोस्त बने होंगे, तो उसे लगा होगा कि शायद वैसी दोस्ती नहीं है। क्योंकि अब वो बिजी रहता है, इधर मैं भी बिजी रहता हूं। लेकिन हम लोगों की दोस्ती तो पहले जैसी ही है। हम जब भी मिलते हैं तो बहुत अच्छे से मिलते हैं और पास ही रहते हैं एक-दूसरे के। जब भी बात होती है तो वैसे ही होती है जैसे पहले होती थी। तो कुछ बदलाव नहीं आया है। मगर यह जरूर कहूंगा कि मेरे भी ज्यादा दोस्त नहीं हैं। यानी जो पुराने दोस्त हैं, वह हैं और जो ग्रुप हैं, बस उसमें दोस्त है। अब उतना वक्त मिलता नहीं है कि नए दोस्तों से मिलो या नए लोगों से दोस्ती करो।

इंडस्ट्री में हमेशा इनसाइडर-आउटसाइडर की जंग चलती रहती है। कार्तिक ने भी इस बारे में बात की। क्या आपको अपने स्टंट डायरेक्टर पिता जय सिंह निज्जर का कुछ फायदा मिला?

फायदा तो इस बात का ही मिला कि मैं बड़ा खुश हूं कि मैं उनका बेटा हूं और उन्होंने बहुत ही सामान्य रूप से अपनी शुरुआत की थी जहां उन्होंने एक फाइटर के रूप में काम किया था। फिर उन्होंने एक्शन डायरेक्टर के तौर पर काम किया जो बहुत मुश्किल है। तो हमें भी पापा के लिए बहुत कुछ करना होता है। लेकिन मुझे ये पता था कि ऑडिशन तो देना ही पड़ेगा। अगर आप लुक टेस्ट-ऑडिशन पर नहीं जा रहे हैं, अपने क्राफ्ट पर काम नहीं कर रहे हैं तो कोई भी फिल्ममेकर आपको फिल्म में नहीं लेगा। अगर आप अपनी कला पर मेहनत कर रहे हो तो आप ऐक्टर बनोगे। यहां कला सबकुछ है तो कोई मायने नहीं रखता कि आप किसके बेटे हो। मैंने तो खुद बहुत स्ट्रगल किया है। जब लगातार काम किया, अपने ऊपर और मेहनत की, तब जाकर हमें रोल मिले।

आप फिल्म साइन करते हो तो क्या चीज सबसे ज्यादा मायने रखती है?

मेरे लिए तो स्क्रिप्ट काफी मायने रखती है। अगर स्क्रिप्ट पढ़ते हुए आपको लग रहा है कि यह दर्शकों को पसंद आएगी और फिल्म उसी अंदाज में बन रही है तो ठीक है। उस कहानी को लिखा कैसा गया है, किस चीज पर लिखा गया है, यह सब बातें बहुत मायने रखती हैं। लेकिन एक परफॉर्मर के तौर पर आप एक्साइटेड तभी होते हो जब उसे अच्छे अंदाज में लिखा गया होता है। तो मेरे लिए स्क्रिप्ट बहुत मायने रखती है।

आप फिल्म लव की अरेंज मैरिज में नजर आ रहे हैं। जब यह फिल्म सामने आई तो क्या कुछ चल रहा था मन में?

मैं और इसके लेखक राज शांडिल्य दोस्त हैं तो हमारे बीच बहुत सारा डिस्कशन होता रहता है। जब इस फिल्म के बारे में बात हुई तो मैं बहुत एक्साइटेड था क्योंकि इसमें एक लव ट्रायंगल है जो बहुत फनी है। साथ ही राजपाल यादव सर, अनु कपूर जी और सुप्रिया पाठक जी जैसे बेहद शानदार कलाकार भी हैं। सभी ऐक्टर्स के लिए इस कास्ट के साथ काम करना सपने जैसा होता है। यह लोग कॉमिडी के लेवल को एक अलग ऊंचाई तक ले जाते हैं। फिल्म में जो लव ट्रायंगल दिखाया गया है, वह बहुत बढ़िया है। मैं हमेशा से ऐसी फिल्में करना चाहता हूं। साथ ही एक सिंगल पैरंट की कहानी दिखाई गई है। तो कई लेयर्स हैं जिन्हें जी5 पर देखने में मजा आएगा।

आपका रिलेशनशिप स्टेटस क्या है? क्या किसी को डेट कर रहे हैं?

अभी तो कोई ऐसा नहीं है। दरअसल मेरे घर वाले मुझ पर शादी के लिए दबाव नहीं डालते हैं। उन्हें हमेशा भरोसा रहा है कि जब भी ढूंढूंगा तो अपने हिसाब से तलाशूंगा। तो आज तक मुझे किसी ने नहीं बोला है। दोस्तों की ओर से भी कोई दबाव नहीं आया है।

आपके आने वाले प्रोजेक्ट्स कौन से हैं?

आने वाले दिनों में मैं रिस्की रोमियो में नजर आऊंगा। इस फिल्म को अबीर सेनगुप्ता ने डायरेक्ट किया है। इसके अलावा मैंने वाइल्ड वाइल्ड पंजाब में काम किया है। साथ ही कई फिल्मों की मैंने शूटिंग की हैं। तो आने वाले दिनों में मैं कई प्रोजेक्ट्स में दिखूंगा।

नोएडावासियों ने लिया प्रण, नियमित योग करेंगे, फिट रहेंगे

21 जून 2024 को विश्व भर में 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। ठंडी हवा के बीच नोएडा में भारी उत्साह के साथ नोएडावासियों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। नोएडा शहर के सेक्टरों की आरडब्ल्यूए, सोसायटियों के साथ ही शहर के सामाजिक संगठनों द्वारा भी योग का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पंचशील प्रतिष्ठा में निवासियों ने किया योग

नोएडा (चेतना मंच)। पंचशील प्रतिष्ठा एओए, सेक्टर-75 द्वारा विश्व योग दिवस पर सुबह बड़ी संख्या में निवासियों की भागीदारी के साथ धूमधाम से योग दिवस मनाया।

सत्र के दौरान योग आसन और प्राणायाम का अभ्यास कराया गया। योग मनसा प्रशिक्षकों ने योग के लाभों और मन, शरीर और आत्मा पर इसके सकारात्मक प्रभावों का वर्णन किया। पंचशील प्रतिष्ठा के निवासियों ने पूरी दुनिया के साथ एकरूप होकर उत्साह और उल्लास के साथ मनाया।

सेक्टर-55 के निवासियों ने एकजुट होकर किया योग

नोएडा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष में सेक्टर-55 आरडब्ल्यूए परिसर में समस्त सेक्टर-55 के परिवार जन ने योग क्रियाओं का लाभ उठाया। लगभग 350 से 400 लोगों ने इस दौरान योग किया। योग का अभ्यास राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से डॉ, राजवीर सिंह एवं राकेश शर्मा व के डी शर्मा ने करवाया। योग कार्यक्रम में आरडब्ल्यूए सैक्टर-55 से आरडब्ल्यूए अध्यक्ष सत्यनारायण गोयल, महासचिव राजेश अग्रवाल, कोषाध्यक्ष राकेश शर्मा, राजरानी अग्रवाल, नीरज शर्मा, कुलदीप शर्मा, अजय शुक्ला, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से डॉ सुरेश चंद्र नागर, दिनेश मिश्रा, अमरपाल सिंह, आलोक सिंह, अरुण शर्मा, विनय राय इत्यादि स्वयंसेवक सम्मिलित रहे।

सेक्टर-11 के सामुदायिक केंद्र में योग

नोएडा (चेतना मंच)। विश्व योग दिवस के अवसर पर सेक्टर-11 के सामुदायिक केंद्र के हाल में सेक्टर 11 के निवासियों द्वारा बड़े हर्षोल्लास के साथ योग किया।

इस कार्यक्रम में सेक्टर की महिलाओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया।

सेक्टर-11 आरडब्ल्यूए के सहयोग से आयोजित किया गया योग कार्यक्रम में योग प्रशिक्षक श्रीमती रस्तोगी ने सभी उपस्थित लगभग 40 से 45 महिलाओं को योग कराया। श्रीमती रस्तोगी को आरडब्ल्यूए सेक्टर-11 संपूर्ण टीम की ओर से सम्मानित किया गया।

इस दौरान अध्यक्ष प्रदीप अग्रवाल एवं कोषाध्यक्ष एस.सी. अग्रवाल, हीरालाल गुप्ता एवम समस्त आरडबल्यूए टीम ने अपना सहयोग दिया। उसके लिए सभी को पुन: धन्यवाद ।

उत्साह के साथ मनाया अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

नोएडा (चेतना मंच)। फेडरेशन आरडब्ल्यूए ऑफ़ सेक्टर-34 द्वारा पतंजलि योग समिति एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहयोग से सामुदायिक केंद्र सेक्टर-34 में दसवाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। सेक्टर निवासी महिलाएं, बड़े बुजुर्ग और छोटे-छोटे बच्चे सुबह 5.30 बजे सामुदायिक केंद्र सेक्टर 34 में पहुंच गए।

आरडब्ल्यूए महासचिव धर्मेन्द्र शर्मा ने बताया कि इस बार की योग थीम महिला सशक्तिकरण थी। उन्होंने योग शिक्षक कर्नल मनोज पांडेय का धन्यवाद करते हुए उपस्थित सभी निवासियों को अपने उत्तम स्वास्थ्य के लिए अपने व्यस्ततम समय में से कुछ समय निकाल कर योग करने की आदत बनाने के लिए प्रेरित किया।

इस दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नोएडा से संघचालक दिनेश गोयल, पतंजलि योग समिति से कर्नल मनोज पांडे, देवेंद्र कुमार, कुलदीप मुंशी, प्रदीप सिंह, कन्हैया लाल के साथ लगभग 125 निवासियों ने योग दिवस पर एक साथ योग किया।

सेक्टर-122 में उत्सवी माहौल में मनाया गया योग दिवस

नोएडा (चेतना मंच)। भारतीय योग संस्थान एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

भारतीय योग संस्थान की संस्थापक श्रीमती सीमा गर्ग एवं श्रीमती ललिता चौहान की देख रेख में विभिन्न योग आसन एवं प्राणायाम कराया गया।

योग दिवस की शुरुआत न्यायमूर्ति एस आर यादव एवं डॉ उमेश शर्मा, अध्यक्ष आरडब्लूए द्वारा दीप प्रज्जवलित करके की गई। गीता सिंह का योग पर गीत सबको पसंद आया।

आरडब्ल्यूए सेक्टर-35 नोएडा की ओर से एनपी सिंह, राजीव जैन, अनिल तलवार, एम पी सिंह, एस के वैद एवं अन्य पदाधिकारियों ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में भाग लिया। योग प्रशिक्षक के तौर पर श्रीमती देव बाला वर्मा ने सेक्टरवासियों को योग करवाया।

अग्रवाल मित्र मंडल के पदाधिकारियों ने किया योग

नोएडा। सेक्टर-33 नोएडा स्थित अग्रेसन भवन में 10वे अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर

अग्रवाल मित्र मंडल द्वारा आयोजित योग कार्यक्रम के संयोजक संदीप अग्रवाल रहे। संस्था के अध्यक्ष विकास बंसल तथा महामंत्री विपिन अग्रवाल ने बताया की प्रत्येक मनुष्य को योग करना बहुत जरूरी है।

इस अवसर पर अग्रवाल मित्र मंडल के अध्यक्ष विकास बंसल, महासचिव विपिन अग्रवाल, कोषाध्यक्ष अनुज गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र जैन, संजय गोयल, संदीप अग्रवाल, बलराज गोयल, श्रीकांत बंसल, मोहनलाल गुप्ता, एम.जी गुप्ता, राधाकृष्ण गर्ग, सुनील गुप्ता, रवि गर्गेश, मुकेश गुप्ता, भूपेंद्र मित्तल, सुशील सिंघल, दसरथ बंसल, सत्यप्रकाश अग्रवाल, रोहतास गोयल, पुनीत गर्ग, अनिल गुप्ता, अमीश राजवंशी, विजय अग्रवाल, मनोज गोयल, विपिन अग्रवाल, सी.के अग्रवाल, पीयूष मोहन, संदीप अग्रवाल, तुषार गोयल, निरंजन गुप्ता आदि सम्मानित गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

पहल संस्था ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर करवाया योग

ग्रेटर नोएडा (चेतना मंच)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर पहल वेलफेयर फाउंडेशन की

टीम ने जे.के.जी पाम कोर्ट, गौरसिटी-2, गौतमबुद्धनगर में भव्य योगा कार्यक्रम का आयोजन किया, आज के कार्यक्रम में सकड़ों लोगों की सहभागिता रही। महिलाओं और सीनियर सिटीजन को संस्था की टी-शर्ट उपहार देकर सम्मानित किया गया।

संस्था के अध्यक्ष डी.के. सिंह ने इस अवसर पर कहा कि आजकल की भाग-दौड़ वाली जिंदगी में अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए समय निकलना बहुत मुश्किल है परन्तु अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए रोजाना प्रात: योग करना जरूरी है।

कार्यक्रम में पहल वेलफेयर फाउंडेशन के अध्यक्ष डी.के. सिंह, कार्यक्रम प्रभारी के.के.सिंह, योगा गुरु धर्मवीर, मधुकर, विजेंदर, सी.पी राय, अमन नारंग, तुहिन सक्सैना, त्रिलोचन सिंह, विनय श्रीवास्तव, उमेश, रामलखन केसरी, के.के.शर्मा, रामनारायण त्रिपाठी, धनपाल सिंह, प्रिया सिंह, बीनू सिंह, रेणुका, ममता, अनुपमा, कुसुम, संगीता, बबली, भावना, रुपेश, आकांक्षा, आयुष्मान और अभिनव आदि सैकड़ों सदस्य उपस्थित रहे।

सेक्टर-75 प्लॉट-II पर स्थित गोल्फ सिटी सोसायटी के निवासी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योगासन करते हुए।

गाजियाबाद पुलिस ने किया योग

गाजियाबाद (चेतना मंच)। 'स्वयं और समाज के लिए योग' थीम पर आधारित दशम् अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21, जून 2024 के उपलक्ष्य में रिजर्व पुलिस लाईन्स कमिश्नरेट गाजियाबाद में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें गाजियाबाद पुलिस के अधिकारियों व कर्मियों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भारतीय योग संस्थान द्वारा सेक्टर-47 में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में फोनरवा के अध्यक्ष योगेन्द्र शर्मा मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। योग कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि योग एक प्राचीन भारतीय जीवन-पद्धति है, जिसके माध्यम से शरीर, मन और मस्तिष्क को पूर्ण रूप से स्वस्थ किया जा सकता है। आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में स्वास्थ्य तथा शांत रहने के लिए योग को अपनाना आवश्यक है।

सेक्टर-27 आरडब्ल्यूए एवं क्लब-27 ने लगाया योग शिविर

नोएडा (चेतना मंच)। विश्व योग दिवस के अवसर पर सेक्टर-27 आरडब्ल्यूए एवं क्लब-27

द्वारा भारतीय योग संस्थान के सहयोग से क्लब-27 में योग शिविर का आयोजन किया।

योग शिविर में योग गुरु-अंजलि खुंगर, हरिवंश राय, रमाकांत द्विवेदी के द्वारा योग कराया गया एवं योग से संबंधित होने वाले लाभ एवं अन्य महवत्पूर्ण जानकारी दी गई।

सेक्टर-27 आरडब्ल्यूए अध्यक्ष राजीव गर्ग ने अपने उद्बोधन में भारतीय संस्कृति की विरासत में योग को अत्यंत लाभकारी एवं स्वस्थ जीवन जीने का आधार बताया और निरंतर योग करने से खुद को प्रसन्नचित् एवं मन को शांत रखने का विकल्प बताया।

इस अवसर पर मदन लाल शर्मा, एसके वर्मा, जुगल किशोर गुप्ता, विद्याराम अवाना, रोहतास गोयल, निर्मल गुहा एमके अग्रवाल, शिवराम, कपिल जैन, आर सी मित्तल, आशीष अग्रवाल, लता गोयल, सुमन जैन, सुषमा वाधवा, हर्षिता, कुमकुम सिंघल, शिखा भारद्वाज, जसप्रीत कौर, अनिता शर्मा आदि लगभग 125 लोगों के साथ बच्चों ने भी भाग लिया।

SAHARA BUILDER & PROPERTIES™
ISO 9001:2008
PROPERTIES AVAILABLE FOR SALE IN GREATER NOIDA

RESIDENTIAL

S.No	Plot Size	House No./Block	Price	Other Details
1	300 Sq.mtr	C-291, Sigma - 02	92 Lakh	Completion, S/W
2	200 Sq.mtr	G-660, Alpha - 02	1.25 Cr.	Completion,N/E & 18 MTR Road
3	60 Sq.mtr	G-439, Gamma - 02	52 Lakh	Single Story, Corner(18X12),N/E
4	1265 Sq.ft	Silver City - 02, PI-1	55 Lakh	2+1 BHK Apartment
5	29.76 Sq.ft	3TF/Block-60, Sector - 10	9 Lakh	1 BHK, Top Floor
6	2450 Sq.ft	Royal Apartment(Duplex), Sigma - 04	On Request	4BHK, Low rise, Lift
7	237 Sq.mtr	C-363, Sector - 03(EXTN)	1.40 Cr.	50% Completion, Corner, N/ W
8	110 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	23000/Sq.Mtr.	Corner Plot
9	131 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	23000/Sq.Mtr.	Corner Plot
10	930 Sq.mtr	5% Plot, CHI PHI EXTN	14000/Sq.Mtr.	Corner Plot

COMMERCIAL

S.No	Shop Size	Complex Address	Price	Other Details
1	29.5 Sq.mtr	Block - C, Alpha - 01	95 Lakh	G.Floor, Corner, N/E
2	463 Sq.ft	NQI Plaza, Alpha - 01	95 Lakh	G.Floor, N/E
3	19.5 Sq.mtr	Kadamba Shopping Complex, Gamma -01	40 Lakh	G.Floor, N/W
4	8.15 Sq.mtr	Kiosk, P-3	22 Lakh	24 Mtr Road, N/W

CONTACT US :+919810441077, +919710441077
Add- Office No. 205, Sunrise Tower, Alpha 1
Commercial Belt, Gr.Noida, G.B.Nagar, U.P-2010308